प्रथम अध्याय

(शोध परिचय)

1.1 प्रस्तावना :–

''जो ज्ञान मन और हृदय को पवित्र करे वही सच्चा ज्ञान है, बाकी सब अज्ञान हैं।''

स्वामी रामकृष्ण परमहंस

शिक्षा का मानव जीवन अत्यधिक महत्व हैं। शिक्षा ही वह साधन है, जो मानव को प्राणी जगत में अन्य जीवों से पृथक करती है। शिक्षा मानव की दूसरी जन्मदात्री हैं। एक माँ बालक को जीवनदान देकर सृष्टि में रहने योग्य बनाती हैं। शिक्षा प्रक्रिया द्वारा मानव पूर्ण बनता है। पुनः जन्म लेता है। शिक्षा प्रदान करने का कार्य शिक्षक ही करता हैं।

वह ज्योति पूंज है, जो मनुष्य के अंधकार को दूर करके, ज्ञान रूपी प्रकाश को अवलोकित करती हैं। जिस सूर्य का प्रकाश पाकर कमल का फूल खिल उठता है, तथा सूर्यास्त होने पर कुम्हला जाता है ठीक उसी प्रकार शिक्षा के प्रकाश को पाकर प्रत्येक व्यक्ति कमल के फूल की भांति खिल उठता है। शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है, जो बालक की समस्त शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों का विकास कर उसे पूर्णता प्रदान करती हैं।

सिल्वरमैन ने भी कहा है कि–''शिक्षा चिकित्सा व्यवसाय की तरह एक कला है, जिसमे शिक्षण कौशल शिक्षण शैली तथा सृजनात्मकता के सिद्धान्त निहित है, लेकिन मेडिसन की भांति वह विज्ञान भी है और होना भी चाहिए क्योंकि इसमें तकनीकों, तरीको व कौशलों का अध्यापन होने के बाद संचरण एवं सुधार होता है। महान शिक्षक एक अच्छे डॉक्टर की तरह अपने व्यवसाय में सृजनात्मकता और प्रेरणा के तत्व समाहित करता हैं।'' शिक्षक एक जटिल प्रक्रिया है जिसमे शिक्षक को पाठ्यवस्तु की प्रकृति शिक्षण उद्देश्य अधिगम के प्रकार, छात्रों की अभिरूचियों तथा योग्यताओं, शिक्षण विधियां छात्रों के पूर्ण व्यवहार आदि को ध्यान में रखते हुए शिक्षण कार्य करना होता है जब शिक्षण को पूर्ण तैयारी से किया जाता है तो छात्र द्वारा अधिगम प्रक्रिया सुचारू रूप से संचालित होती है

और अपेक्षित परिवर्तन दिखाई देता है। कार्य के सम्पादन में शिक्षण विधियां तथा कौशल का विशेष महत्व रहता हैं।

जो शिक्षण यह नहीं जानता कि शिक्षा शास्त्रियों के शिक्षण एवं अधिगम के क्षेत्रों के प्रतिपादित सिद्धान्त क्या है? अतः पाठ्यपुस्तकों विद्यार्थियों शिक्षण विधियों व कौशलों के ज्ञान की आवश्यकता शिक्षक को होती है। यह शिक्षण का वैज्ञानिक पक्ष है। शिक्षण के प्रति रूझान होना एवं उसे विकसित करना आदि शिक्षण की कला को प्रतिम्बित करते हैं।

आधुनिक समय में शिक्षा के कार्य अथवा शैक्षणिक कार्य अत्यन्त व्यापक होते जा रहे है जिस प्रकार मानव तीव्र गति से अपना विकास कर रही है, उसी प्रकार कार्य का भी विस्तार हो रहा है क्योंकि शिक्षा ही एक ऐसा माध्यम है जो कि हमें अनुसंधान को लिए प्रेरित करती है तथा सहायता पहुंचाती है वस्तुतः आज शिक्षा का महत्वपूर्ण कार्य ऐसे ज्ञान का विकास तथा प्रसारण करना।

शिक्षा एक सोद्रद्देश्य प्रक्रिया है। शिक्षा का उद्देश्य समय–समय पर समाज की आवश्यकतानुसार बदलते रहते है कुछ लोगों के अनुसार निर्धारित पाठ्क्रम को पढा देना या छात्रों द्वारा सीख लेना ही शैक्षिक उद्देश्य होता है शिक्षक हमेशा ऐसी शिक्षण विधि के प्रयोग के प्रयास में रहता है जिससे छात्रों का अधिक से अधिक विकास हो सके तथा शिक्षण कौशलों के माध्यम से शिक्षक उन शिक्षण क्रियाओं तथा व्यवहारों के सम्पादन से सम्बन्धित जो छात्रों को सीखने में सुगमता प्रदान करते है। शिक्षण कौशलों के माध्यम से शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायता मिलती है। कौशल ही वह साधन है जिसके माध्यम से शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाया जा सकता हैं।

शिक्षण विधियां :–

शिक्षण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा शिक्षक इस बात का पूर्ण प्रयास करता है कि छात्र उस ज्ञान या अनुभव को अधिक से अधिक आत्मसात् कर ले कि वह आगे आने वाले दिनों में पुनः अपने काम आ सकें जिस ढंग से शिक्षक शिक्षार्थी को ज्ञान प्रदान करता है उसे शिक्षण विधि कहते हैं। शिक्षण विधि पद का प्रयोग बड़े व्यापक अर्थ में होता है इसके अन्तर्गत अनेक प्रणालियां व योजनाएं सम्मिलित रहती है दूसरी और शिक्षण की प्रक्रियाएं

भी सम्मिलित कर ली जाती है इन शिक्षण विधियों मे अनेक शिक्षण विधियों का समावेश होता हैं।

"शिक्षा में शिक्षण–विधि शब्द द्वारा पथ प्रदर्शित की हुई उन क्रियाओं की एक श्रृंखला है जो छात्रों के द्वारा सीखने मे परिणत होती हैं।" वैस्ले

शिक्षण विधियां :–

1. आगमनात्मक तथा निगमनात्मक विधि
2. सश्लेणात्मक तथा विश्लेषणात्मक विधि
3. पाठ्यवस्तु विधि
4. दृष्टान्त विधि
5. कथन विधि व व्याख्यान विधि
6. प्रश्नोत्तर विधि
7. करके सीखना
8. शोध विधि
9. प्रोजेक्ट विधि
10. डॉल्टन विधि
11. भ्रमण विधि
12. सर्वेक्षण विधि

1. आगमनात्मक तथा निगमनात्मक विधि :–

पाठ्यवस्तु को प्रस्तुत करने के दो ढंग हो सकते हैं। एक छात्रों को कोई सामान्य सिद्धान्त बताकर उसकी जांच या पुष्टि के लिए अनेक उदाहरण दिये जाते हैं। दूसरे में पहले अनेक उदाहरण देकर छात्रों से कोई सामान्य नियम निकलवाया जाता हैं। पहली विधि को निगमनात्मक विधि और दूसरी विधि को आगमनात्मक विधि कहते हैं।

2. सश्लेणात्मक तथा विश्लेषणात्मक विधि :–

पाठ्वस्तु को उपस्थित करने का ढंग यदि ऐसा है कि पहले अंगों का ज्ञान देकर तब पूर्ण वस्तु का ज्ञान कराया जाता है तो उसे सश्लेषणात्मक विधि कहते हैं। जैसे हिन्दी

पढ़ाने में पहले वर्णमाला सिखाकर तब शब्दों का ज्ञान कराया जाता है। तत्पश्चात् शब्दों से वाक्य बनवाये जाते है परन्तु यदि पहले वाक्य सिखाकर तब शब्द और अंत में वर्ण सिखाएं जाएं तो यह विश्लेषणात्मक विधि कहलायेगी।

3. पाठ्यवस्तु विधि :–

प्रत्येक शिक्षण–पद्धति का प्रयोग पाठ्यपुस्तक को आधार बनाकर किया जा सकता है। पाठ्यवस्तु वह उपकरण है जिसके द्वारा किसी निर्दिष्ट उद्देश्य या तथ्य को प्राप्त किया जा सकता है। इस प्रकार हम यह कह सकते है पाठ्पुस्तक एक स्वतंत्र शिक्षण–पद्धति नहीं है वरन् यह वह प्रक्रिया या माध्यम है जिसके द्वारा ज्ञान अर्जित किया जा सकता हैं।

4. दृष्टान्त विधि :–

दृष्टान्त विधि से दृष्टातों के माध्यम से ज्ञान प्रदान किया जाता हैं। दृष्टांत दृश्य भी हो सकते है और श्रव्य भी। इसमे चित्र, मानचित्र, चित्रपट आदि के सहारे वस्तु का स्पष्टीकरण किया जाता है साथ ही उपमा, उदाहरण, कहानी, चुटकले आदि के द्वारा भी विषय का स्पष्टीकरण हो सकता हैं।

5. कथन विधि व व्याख्यान विधि :–

जब बच्चों के कुछ–कुछ अनुमान करने तथा अप्रत्यक्ष वस्तु को भी समझने का अभ्यास हो जाता है तब कथन विधि का सहारा लिया जाता हैं।[1]

इसमें वर्णन के द्वारा छात्रों को पाठ्यपुस्तक का ज्ञान दिया जाता है परन्तु इस विधि मे छात्र निष्क्रिय श्रोता बने रहते हे और पाठन प्रभावशाली नहीं होता है इसी से प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री हर्बर्ट स्पेंसर ने कहा है ''बच्चों को कम से कम बतलाना चाहिए उन्हें अधिक से अधिक स्वतः ज्ञान द्वारा सीखना चाहिए।'' उच्च कक्षाओं में प्रायः व्याख्यान विधि का ही प्रयोग लाभदायक समझा जाता है।

---

1 शर्मा, पदमा (2006)''सामाजिक अध्ययन विभाग'' विनोद पुस्तक मन्दिर पे.न.19.42

6. प्रश्नोत्तर विधि :–

प्रश्न यद्यपि एक युक्ति है फिर भी सुकरात ने प्रश्नोंत्तर को इस विधि के रूप में प्रयोग करके इसे अधिक महत्व प्रदान किया हैं। इसी को सुकराती विधि कहते है। इसमें प्रश्नकर्ता द्वारा प्रश्न किये जाते है और उत्तरों के आधार पर उसी से प्रश्न करते करते उपेक्षित उत्तर निकलवा लिया जाता है।

7. करके सीखना :–

बाल मनोविज्ञान के विकास ने यह सिद्ध कर दिया है कि शिक्षा का केन्द्र न तो विषय हैं और न अध्यापक वरन छात्र है तब से शिक्षण में सक्रियता को महत्व दिया जाने लगा था। करके सीखना अर्थात् स्वानुभव द्वारा ज्ञान प्राप्त करने आजकल का सर्वाधिक व्यापक शिक्षण सिद्धान्त हैं।

8. शोध विधि :–

जर्मनी के प्रोफेसर आर्मस्टौंग द्वारा शोध विधि का प्रतिपादन हुआ था। इस विधि मे छात्रों को उपयुक्त वातावरण में रखकर स्वयं किसी तथ्य को ढुढने ंके लिए प्रेरित किया जाता हैं। इसका यह अर्थ नहीं है कि अध्यापक कुछ नहीं करता और छात्रों का मनमाना काम करने को छोड़ देता है। सच पुछिये ंतो छात्र का पथ प्रर्दशन करता है तथा गलत रास्ते से हटाकर सीधे रास्ते पर लाता रहता है इस विधि का प्रयोग पहले तो विज्ञान की शिक्षा में किया गया। फिर धीरे–धीरे गणित भूगोल तथा अन्य विषयों में भी इसका प्रयोग होने लगा।

9. प्रोजेक्ट विधि :–

अमेरिका के प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री डयूवी, किलपैट्रिक स्टीवेंसन आदि के सम्मिलित प्रयास का फल योजना (प्रोजेक्ट विधि) हैं। इसके अनुसार ज्ञानप्राप्ति के लिए स्वभाविक वातवरण अधिक उपयुक्त होता हैं इस विधि से पढाने क लिए कोई समस्या जी जाती हैं। जो प्रायः छात्रों के द्वारा उठाई जाती है और उस समस्या का हल करने के लिए उन्हीं के

द्वारा योजना बनाई जाती है कि और योजना को स्वाभाविक वातावरण में पूर्ण किया जाता है कि योजना वह समस्यामूलक कार्य है जो स्वाभाविक वातावरण में पूर्ण किया जाए।

10. डाल्टन योजना :–

अमेरिका ने डाल्टन नामक स्थान ने 1912 से 1915 के बीच कुमारी हेलेन पार्खर्स्ट्र ने शिक्षा की एक नई विधि प्रयुक्त की जिसे डाल्टन योजना कहते है। यह विधि कक्षा शिक्षण के दोषों को दूर करने के लिए आविष्कृत की गई थी। डाल्टन योजना के कक्षा भवन का स्थान प्रयोगशाला ले लेती हैं।

शिक्षण कौशल

एक अच्छा ''शिक्षक प्रशिक्षण सदैव अपने प्रशिक्षणार्थियों में विशिष्ट कौशलों में निपुणता प्रदान करता है। अतः एक छात्राध्यापक के लिए आवश्यक हो जाता है कि वह शिक्षण कौशलों का अर्थ समझें, उनकी धारणाओं से परिचित हो और उन पर पूर्ण अधिकार प्राप्त करने मे समर्थ हो। तभी वह अच्छा और निपुण शिक्षक बन सकता।''

'शिक्षक कौशल को समझने के लिए इसका शाब्दिक विवेचन कर लेना उपयुक्त रहेगा। यह दो शब्दों से मिलकर बना हैं।'

1. शिक्षण– अर्थात् पढाना या शिक्षार्थी के व्यवहार मे वांछित परिवर्तन लाने का प्रयास करना।

2. कौशल– अर्थात् क्रियाओं या समान व्यवहारों का समूह

इस प्रकार शिक्षण कौशल का अर्थ स्पष्ट है कि पढानें या शिक्षार्थी के व्यवहार मे वांछित परिवर्तन लाने के लिए शिक्षण में प्रयुक्त होने वाली क्रियाओं या समान व्यवहारों का समूह शिक्षण कौशल हैं।

1. शिक्षण कौशल परिभाषाएँ :–

बी.के. पासी के अनुसार :–''शिक्षण कौशलों का तात्पर्य सम्बन्धित शिक्षण क्रियाओं अथवा व्यवहारों के सम्पादन से है जो शिक्षार्थियों के सीखने में सुविधा प्रदान करने की दृष्टि से किया जाता हैं।''[2]

स्ट्रेसर के अनुसार :– ''शिक्षण कौशल वह योजना है जो शिक्षण उद्देश्यों, व्यवहारगत परिवर्तन, पाठ्यवस्तु कार्य विश्लेषण अधिगम अनुभवों, तथा शिक्षार्थियों के पूर्वज्ञान को विशेष महत्व देती हैं।''

3.''शिक्षक कौशल शिक्षक के हाथ में वह शस्त्र है जिसका प्रयोग करके शिक्षक अपने कक्षा–शिक्षण को प्रभावशाली तथा सक्रिय बनाता है तथा कक्षा की अन्तःप्रक्रिया में सुधार लाने का प्रयास करता है'' (डॉ.कुलश्रेष्ठ 1993)

4. शैक्षिक शब्दाकोष के अनुसार :–''कौशल मानसिक शारीरिक क्रियाओं की कृमबद्ध और समन्वित प्रणाली होता हैं।''

शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षण कौशल आपस मे ं नियोजित एवं समन्वित ढंग से कार्य करते हैं। भावी शिक्षकों को इन कौशलों को बारे में परिचित होना चाहिए। सभी विषयों के शिक्षण कौशलों की पहचान सर्वप्रथम एलन तथा रॉयन ने 1969 में की इन्होनें शिक्षक प्रशिक्षण क सम्बन्ध में 14 शिक्षण कौशलों का विवरण दिया–डॉ.बी.के.पासी, एम.एम भट्टाचार्य एवं अब्राहिम ने शिक्षण में प्रयुक्त होने वाले 12 कौशलों की विवेचना की।

विभिन्न शिक्षण कौशलों के अर्थ को स्पष्ट करने के पश्चात् हम अध्ययन करेगे कि एक शिक्षण अभ्यास के द्वारा शिक्षक विभिन्न शिक्षण कौशलों में पारगंत हो सकता है इसके लिए महत्वपूर्ण शिक्षण कौशल बतायें गये है जो इस प्रकार है–

1. पाठोपस्थापन कौशल
2. प्रश्न करने का कौशल
3. प्रदर्शन कौशल
4. उदाहरण द्वारा स्पष्टता का कौशल
5. व्याख्या करने का कौशल

---

2 माथुर सावित्री (2007), सुक्ष्म शिक्षण एवं शिक्षण कौशल'' आस्था प्रकाशन जयपुर पे.न. 45.114

6. पुनर्बलन कौशल

7. उद्दीपन कौशल

8. श्यापट्ट के उपयोग का कौशल

1. पाठोपस्थापन कौशल :–

पाठोपस्थापन से ताप्तर्य हे उन समस्त क्रियाओं से है जो पाठोरम्भ से लेकर उद्देश्य कथन तक पाठ के लिए शोधार्थी को पाठ्यपुस्तक की मानसित तैयारी के लिए की जाती है। शिक्षक अपनी पाठ्यवस्तु को सफलतापूर्वक शिक्षार्थियों तक विभिन्न प्रकरणों के माध्यम रूप से ग्रहण करने में रूचि लेगें। पाठोस्थापन कौशल में पूर्वज्ञान का अभिप्रेरणा, रूचि का निर्माण निम्न घटकों का प्रयोग किया जाता हैं।

2. प्रश्न करने का कौशल :–

शिक्षक में प्रश्न करने के कौशल का ज्ञान उतना ही आवश्यक है जितना कि चित्रकार को ब्रश चलाने और बढई को आरी चलाने का ।

प्रश्न करने के कौशल के माध्यम से शिक्षक कक्षा–कक्ष में क्रियाशीलता का वातावरण निर्मित करता है जिससे शिक्षार्थी के पूर्व ज्ञान की जांच हो सके, शिक्षार्थी की आवश्यकतानूसार उनकों शिक्षण करवा सके इसके माध्यम से शिक्षक–शिक्षार्थी के मध्य अन्तः क्रिया होती हैं। कक्षा शिक्षण मे प्रश्न कौशल के माध्यम से शिक्षार्थी व शिक्षार्थी के मध्य सहभागिता को बढाने के उद्देश्य से भी किया जाता हैं। प्रश्न कौशल में प्रश्नों की भाषा सरल स्पष्ट शुद्ध होनी चाहिए। प्रश्न संक्षिप्त होने चाहिए, कृमबद्धता होनी चाहिए, खोजपूर्ण प्रश्न होने चाहिए।

3. प्रदर्शन कौशल :–

किसी वस्तु की स्पष्ट धारणा का वर्णन करने के लिए सबसे अच्छा ढंग कि उसकी प्रत्यक्ष अनुभूति करना। ज्ञान के स्थायी होने के लिए आवश्यक है कि शिक्षार्थियों को प्रत्यक्ष अनुभव कराया जाये। जिससे सीखा हुआ ज्ञान स्थायी होगा इसलिए शिक्षक जहां केवल बोल कर ज्ञान प्रदान करता है वही चित्र मॉडल या किसी प्रयोग को करके दिखलाये तो शिक्षण अधिक प्रभावी होगा। प्रदर्शन कौशल में प्रदर्शन की सरलता व स्पष्टता,

स्तरानुकूलता, रोचकता, दृष्टत्यता, प्रभावकता, ध्यानक्रेन्द्रण, विद्यार्थियों की सहभागिता प्रदर्शन का औचित्य आदि घटकों का समावेश होना चाहिए।

4. उदाहरण द्वारा स्पष्टता का कौशल :–

शिक्षक शिक्षक प्रक्रिया को प्रभावी बनाने के लिए विभिन्न कौशलो ंका प्रयोग करता हैं। शिक्षार्थी ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से ज्ञानार्जनकरता है अतः अधिगम प्रक्रिया का प्रभावी बनाने के लिए यथार्थ अनुभव दिये जाये उदाहरणों के द्वारा यथार्थ की बाते बताकर शिक्षार्थियों को ज्ञान देने का कार्य किया जाए। इस प्रकार यह कौशल शिक्षण को सरल, रोचक तथा बोधगम्य बना देता है। उदाहरणों द्वारा व्याख्या करना ज्ञात से अज्ञात की और सूत्र पर आधारित होता हैं।

5. व्याख्या करने का कौशल :–

व्याख्या कौशल के द्वारा पाठ्यवस्तु विस्तृत रूप लेकर पाठ में रोचकता उत्पन्न करके प्रस्तुत की जाती हैं। इस कौशल के द्वारा क्रमबद्धता सहित विश्लेष्ण पर बल दिया जाता है व्याख्या कौशल में विषय वस्तु का सरल रूप विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है इसके लिये विषयवस्तु के समस्त पहलुओं की चर्चा की जाती हैं।

6. पुनर्बलन कौशल :–

यह पूर्णतः मनोवैज्ञानिक तथ्य है जिसका शिक्षण में ज्ञान को स्थायी रूप प्रदान करने के लिये उपयोग में लाया जाता है। किसी वांछित क्रिया को करने पर पुनर्बलन देकर उस क्रिया को फिर से करने की सम्भावनाओं को बढाया जाता है या अवांछित क्रिया की आवृति कम की जाती है। शिक्षण के अन्तर्गत शिक्षक विद्यार्थियों से प्राप्त अपेक्षित व्यवहारों के सुदृढीकरण करने हेतु पुनर्बलन का प्रयोग करता हैं।

7. उद्दीपन परिवर्तन का कौशल :–

उद्दीपन का अर्थ व्यक्ति के सम्मुख घटना या स्थिति के परिवर्तन से है इस घटना या स्थिति के परिवर्तन के परिणामस्वरूप व्यक्ति अनुक्रिया में वृद्धि करता हैं। उद्दीपन परिवर्तन में लेखन में स्पष्टता, कार्य करने की तत्परता, श्यामपट्ट का प्रयोग, कार्य की

प्रांसगिकता, शब्दों के मध्य उचित अन्तराल आदि घटकों का प्रयोग करने से शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावी बनाया जा सकता हैं।

8. श्यामपट्ट के उपयोग का कौशल :–

कक्षा शिक्षण में श्यामपट्ट से हमारा ताप्पर्य उस पट्टिका से है जो शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिये लिखने तथा चित्रादि बनाने के काम आती है तथा जिसे आसानी से साफ करकें फिर से काम में लिया जा सकता सकें श्यामपट्ट में लेखन में स्पष्टता, सुन्दर व आर्कषक अक्षरों में उपयुक्त अन्तराल, अक्षरों का पर्याप्त आकार इसके माध्यम से शिक्षार्थी का ध्यान पाठ्यवस्तु पर केन्द्रित होता है, भाषा शिक्षण मे उपयोगी, कठिन विषयों के प्रस्तुतीकरण में उपयोगी, इसके माध्यम से पाठोपस्थापन रोचक व सरल बनता हैं।

1.2 शोध से उभरने वाले प्रश्न :–

1. इंटर्नशिप के दौरान शिक्षण विधियों व कौशलों के किन–किन चरणों का प्रयोग किया जाता हैं?
2. इंटर्नशिप के दौरान प्रशिक्षणर्थियों द्वारा किन–किन शिक्षण विधियों का प्रयोग किया जाता है?
3. इंटर्नशिप के दौरान प्रशिक्षणर्थियों द्वारा दक्षतापूर्वक किन–किन शिक्षण विधियों का प्रयोग किया जाता है?
4. कक्षा–कक्ष में इंटर्नशिप के दौरान प्रशिक्षणर्थियों द्वारा कौन–कौनसे कार्यकलाप किये जाते है?

1.3 समस्या कथन :–

''इंटर्नशिप में शिक्षण विधियों, सम्बन्धित कौशलों एवं उनकी अनुप्रयोगात्मक दक्षता का विश्लेषणात्मक अध्ययन।''

1.4 तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण :–

इंटर्नशिप– प्रशिक्षुता या इंटर्नशिप शब्द प्रायः नया व्यवसाय या नौकरी आरम्भ करने वाले महाविद्यालयी छात्रों विश्वविद्यालय युवकों के लिए प्रयोग किया जाता है जो इस क्षेत्र

में नये उतर होते हैं इसे स्थानबद्ध विद्यालय प्रशिक्षण भी प्रयोग भी कहते है। इंटर्नशिप का प्रयोग शिक्षा संस्थानों के द्वारा शिक्षण अभ्यास हेतु किया जाता हैं।

1. शिक्षण विधि – शिक्षा में शिक्षण विधि शिक्षक द्वारा पथ–प्रदर्शित की हुई उन क्रियाओं की एक श्रृखला है जो छात्रों के द्वारा सीखनें में परिणत होती हैं।

2. शिक्षण कौशल – शिक्षण कौशल वह योजना है जो शिक्षण उद्देश्य, व्यवहारगत परिवर्तन, विषयवस्तु कार्य विश्लेषण, अधिगम अनुभव तथा छात्रों के पूर्व अनुभवों को महत्व देता हैं।

1.5 समस्या का औचित्य :–

शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति का सर्वागीण विकास करना है। शिक्षा का कार्य अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि व्यक्ति एवं राष्ट्र की उन्नति का आधार शिक्षा ही हैं। प्राचीन मान्यताओं के अनुरूप विद्या वही है जिससे भौतिक, दैहिक, आध्यात्मिक व आर्थिक समस्याओं से मुक्ति मिले। परन्तु शिक्षण प्रदान करने का कार्य इतना आसान नहीं है। शिक्षा में गुणात्मक सुधार के लिए आवश्यक है कि प्रभावी शिक्षण की उत्तम व्यवस्था है शिक्षा प्रदान करने का कार्य शिक्षक करता हैं। ज्ञान को विद्यार्थियों तक पहुंचाने के लिए शिक्षक किस तरीके को अपनाते है उस तरीके को शिक्षण विधि कहते है उसी तरह शिक्षण विधियों को प्रभावशाली बनाने के लिये किन–किन कौशलों को शिक्षण प्रक्रिया में प्रयोग में लिया जाता है जिसके माध्यम से शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाय जा सके। वर्तमान समय में शिक्षण व्यवस्था में सुधार करने के लिए अनेक विधियों तथा कौशलों से शिक्षण कार्य करवाया जाता है इसका उपयोग प्रशिक्षणार्थी व्यवहार रूप में कितना करते है तथा उन विधियों तथा कौशलों में उन्होनें कितनी दक्षता हासिल की हैं।

कभी–कभी प्रशिक्षणार्थी पूर्व इंटर्नशिप या शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में तो कौशलों से सम्बन्धित जानकारी प्राप्त करते है और उसका उपयोग भी करते है परन्तु जब उनकों वह विद्यालय में जाकर सही तरीके से उपयोग में नहीं लेते जिससे शिक्षण कार्य प्रभावी नहीं बन पाता। शिक्षण विधियों की उपयोगिता मात्र औपचारिकता बनकर रह जाती है। प्रशिक्षणार्थी शिक्षण विधियों व कौशलों का प्रयोग क्यो नहीं करते है ऐसे प्रश्न उभरकर सामने आते है वर्तमान समय की मांग है कि इन प्रश्नों का उतर देते हुए सम्पूर्ण शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाना। शोधकर्त्री ने शिक्षण विधियों व सम्बन्धित कौशलों का

अध्ययन करके यह पता लगाने का प्रयास करना चाहती है कि शिक्षण विधियां व कौशल कितने व्यावहारिक रूप से प्रयोग में लिये जा रहे हैं।

माली का कार्य बबूल के पौधे को आम के पेड़ में परवर्तित करना न होकर उस पौधे के विकास के लिए उपयुक्त प्रकाश, उर्वरक और जल की व्यवस्था करना है शिक्षक का कार्य इसी माली के समान है एक अच्छा शिक्षक शिक्षण विधियों व कौशलों के माध्यम से परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तन करते हुए शिक्षण कार्य करता हैं।

इंटर्नशिप में शिक्षण विधियों व कौशलों का प्रयोग तो किया जाता है पर उसके परिणाम अच्छे प्राप्त नहीं होते हैं।

1.6 शोध के उद्देश्य :–

1. इंटर्नशिप में शिक्षण विधियों, सम्बन्धित कौशलों एवं उनकी अनुप्रयोगात्मक दक्षता का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।
2. इंटर्नशिप के दौरान प्रशिक्षणर्थियों द्वारा शिक्षण एवं सम्बन्धित कौशलों के अवलोकन संबंधी प्रश्नावली सूची तैयार करना।
3. इंटर्नशिप में छात्राध्यापक तथा छात्राध्यापिकाओं में कौशलों से सम्बन्धित दक्षता का तुलनात्मक अध्यन करना।
4. इंटर्नशिप के दौरान प्रशिक्षणार्थियों द्वारा कक्षा–कक्ष में किए जाने वाले विभिन्न कार्यकलापों का तुलनात्मक अध्ययन।

1.7 शोध की परिकल्पनाएँ :–

1. इंटर्नशिप में छात्राध्यापक तथा छात्राध्यापिकाओं में कौशलों से सम्बन्धित दक्षता में सम्बन्धित अन्तर नहीं पाया जाता हैं।
2. इंटर्नशिप के दौरान प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षण विधियों तथा सम्बन्धित कौशलों के अनुप्रयोग में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता हैं।
3. इंटर्नशिप के दौरान प्रशिक्षणर्थियों द्वारा कक्षा–कक्ष में किए जाने वाले विभिन्न कार्यकलापों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता हैं।

1.8 शोध विधि :–

शोध कार्य में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

1.9 परिसीमन :–

1. प्रस्तुत शोध कार्य बीकानेर जिले की श्री डुंगरगढ तहसील को लिया गया।
2. प्रस्तुत अध्ययन इंटर्नशिप में शिक्षण विधियों, संबंधित कौशलों एवं उनकी अनुप्रयोगात्मक दक्षता का विश्लेषणात्मक अध्ययन तक सीमित है।
3. प्रस्तुत शोध कार्य बीकानेर जिले की श्री डुंगरगढ तहसील के चार सरकारी विद्यालयों में किया गया हैं।
4. शोध कार्य बी.एड प्रशिक्षणार्थियों पर किया जाता हैं।
5. शोध कार्य की अवधि एक सप्ताह ली गयी हैं।
6. प्रस्तुत शोध कार्य में कुल न्यादर्श 30 है। जिसमें 15 छात्राअध्यापक व 15 छात्राअध्यापिकाएं हैं।

1.10 न्यादर्श

कुल न्यादर्श (30)

15 छात्राअध्यापक

15 छात्राअध्यापिका

1.11 उपकरण :–

इंटर्नशिप में शिक्षण विधियों एवं सम्बन्धित कौशलों से सम्बन्धित अवलोकन सूची (स्वनिर्मित)

1.12 सांख्यिकी :–

1. मध्यामान का मान

$$M = \frac{\sum X}{N}$$

2. प्रमाणिक विचलन का मान

$$\sigma = \sqrt{\frac{\sum f d^2}{N}}$$

3. टी का मान –

$$T = \frac{M_1 - M_2}{\sqrt{\frac{\sigma_1{}^2}{N_1} + \frac{\sigma_2{}^2}{N_2}}}$$

द्वितीय अध्याय

2.1 प्रस्तावना :–

किसी भी अनुसंधान में तथ्य सामग्री का उतना ही महत्व है जितना निर्माण में ईंट, सिमेन्ट बजरी का कोई भी अनुसंधान कार्य तथा सामग्री के अभाव में निष्कर्ष निकालने तथा उनकी विश्वसनीयता तथा वैधता बताने में असमर्थ है।

किसी भी विषय के विकास में किसी विशेष प्रारूप का स्थान बनाने के लिए शोधकर्ता को पहले के सिद्धान्तों व पूर्व के शोध से भली–भांति अवगत होना चाहिए। सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण द्वारा शोधकर्ता यह निश्चित कर सकता है कि उसके द्वारा प्रस्तावित शोधो से सम्बन्धित विषयों पर विचारणीय कार्य पहले हो चुका है।

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन अनुसंधान का प्रारम्भिक आधार है तथा अनुसंधान के गुणात्मक स्तर के निर्धारण में एक महत्वपूर्ण कारक है किसी भी परिक्षण की सफलता उसके द्वारा सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन पर निर्भर करता है जिसमें समय श्रम एवं दोहराव जैसी समस्या से बचा जा सकता है। एक अन्य शोधकर्ता आरम्भ करने से पूर्व शोध से सम्बन्धित पूर्व साहित्य का अध्ययन करना आवश्यक समझता है।

2.2 सम्बन्धित साहित्य का अर्थ :–

सम्बन्धित साहित्य का अर्थ :–33

साहित्य शब्द किसी विषय के अनुसंधान की विषय वस्तु के ज्ञान की ओर संकेत करता है, जिसके अन्तर्गत सैद्धान्तिक व्यवहारिक शोध अध्ययन आ जाते है।

नालन्दा अध्ययन कोष के अनुसार :–

साहित्य का अर्थ है किसी भाषा या देश के उन समस्त ग्रन्थों लेखो आदि का समूह जिसे स्थायी उच्च और गुढ़ विषयों का सुन्दर रूप से व्यवस्थित विवेचन हुआ हो साहित्य कहलाता हैं।

सम्बन्धित साहित्य का अध्याय ही वह माध्यम है जो अनुसंधानकर्ता को ज्ञान के शिखर तक ले जाता है, जहां पर वह अपने–अपने क्षेत्र की नवीन उपलब्धियों का ज्ञान प्राप्त करना हैं

प्रत्येक शोध कार्य की सफलता उससे सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन करने पर निर्भर करती है। इसलिए शोधकर्ता को अपनी समस्या से सम्बन्धित यथासम्भव पुस्तकों पत्र–पत्रिकाओं पूर्व में किये गए अनुसंधानो के विवरण से अपने को परिचित करें उसे अपनी समस्या से सम्बन्धित शोध प्रविधि के चयन के बारे में एवं उसमें ब्याज कमियों को दूर करने में सहायता प्राप्त होगी।

सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन को पढ़ने के बाद अनुसंधानकर्ता उसका निरिक्षण तथा मूल्यांकन करता है।

सम्बधित साहित्य की परिभाषा :–

1. जॉन. डब्ल्यू. बेस्ट के अनुसार :– ''पुस्तकालयों एंव अन्य साधनों से प्राप्त समस्या से लिखित साहित्य को पढ़ना, निरीक्षण करना तथा उसका मूल्याकंन करना सम्बन्धित साहित्य का अर्थ है।

2. रमल के अनुसार :– ''नियमानुसार कोई भी शोध सम्बन्धित लिखित विवरण तब तक उपयुक्त नहीं समझा नहीं जाता जब तक की उसे शोध से सम्बन्धित साहित्य के आधार पर उस विवरण में ना हो।''[3]

3. मूल्य के अनुसार :–

''सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन एक ऐसे लैम्प के समान है जो शोधकर्ता के अधेरे से उजाले की ओर ले जाता हैं।

4. ट्रेवर्स के शब्दों में : – ''किसी क्षेत्र की समस्यओं एवं तथ्यों से सुपरिचित होने के लिए उस विषय से सम्बन्धित साहित्य पढ़ना आवश्यक है।''

5. गुड. वार. तथा स्केट्स :–

---

3 राजयादा बी. एस. (2013) ''शिक्षा में अनुसंधान के आवश्यक तत्व'' राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी जयुपर पे. 180.181।

''एक कुशल चिकित्सक के लिये यह आवश्यक है कि वह अपने क्षेत्र में हो रही औषधि सम्बन्धी आधुनिक खोजों से परिचित होता रहे, उसी प्रकार शिक्षा खोजों से परिचित होना आवश्यक है।

2.3 सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण के उद्देश्य :–

1. यह अनुसंधान के लिये सिद्धान्त, विचार व्याख्याएं, तथा परिकलपनाएं प्रदान करता है। जो नयी समस्या के चयन में उपयोगी हो सकती है।
2. यह अनुसंधान के लिये किये गए क्षेत्र में कितना और किस प्रकार का हो चुका है इसकी जानकारी देता है।
3. यह परिकल्पना के लिये साधन प्रदान करता है। शोधकर्ता प्राप्त अध्यायों के आधार शोध परिकल्पनाएं बना सकता है।
4. चयनित समस्या के लिए किस विधि तथा प्रक्रिया का प्रयोग उपयुक्त होगा ? तथा कौनसी सांख्यिकी का प्रयोग करना होगा ? इन सबकी जानकारी देता है।
5. यह परिणामों के विश्लेषण करने में सहायता करता है तथा उपयोगी निष्कर्षो तथा तुलनात्मक तथ्यों को निर्धारित करता है अर्थात् सम्बन्धित अध्ययनों से निकाले गये निष्कर्षो से तुलना की जा सकती है।
6. समस्या के प्रमाणीकरण, अवधारणाऐं, सीमांकन तथा परिकल्पना के निर्माण में सहायता करता है।

2.4 सम्बन्धित साहित्य की सूचनाओं के स्त्रोत :–

सम्बधित साहित्य की सूचनाओं के लिये पुस्तकालय तथा उसकें अनेक साधनों से परिचित होना आवश्यक है। पुस्तकालय के स्त्रोत दो प्रकार के हो सकते थे।

(क) लिखित

(ख) सकंलित

(अ) लिखित :–

लिखित स्त्रोत में वह पूर्व सकंलित सामग्री सम्मिलित है जो प्रकाशित अथवा अप्रकाशित रूप से प्राप्त होती है। लिखित सूचना के निम्न स्त्रोत है।

1. विद्वानो द्वारा लिखित ग्रन्थ–इन ग्रन्थों से हमें अनुसंधान के लिये उपयुक्त सामग्री मिल जाती है।

2. शिक्षा से सम्बन्धित मासिक एवं पाक्षिक पत्र–पत्रिकाऐ लेख प्रतिवेदन आदिं

3. सरकारी समाचार पत्र।

4. बुलेटिन।

5. शोध प्रबंध पीजी एवं पी.एच.डी.।

6. सरकारी, गैर सरकारी एवं अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशन।

7. विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय स्तर का प्रकाशन।

8. शिक्षा का मनोविज्ञान सम्बन्धित लेख सार।

9. शिक्षा का विश्वकोष।

10. ग्रन्थ सूची।

11. उद्धरण के अन्य स्त्रोत।

(ख) संकलित :–

संकलित स्त्रोतो में अनुसंधानकर्ता प्रत्यक्ष रूप से समस्या से सम्बन्धित सामग्री का चयन करता है। अर्थात् इकट्ठा करता है तथा दूसरों को सहयोग भी इस विषय में प्राप्त करता है।

शोधकर्त्री द्वारा द्वितीयक प्रकार के साहित्य का संकलन किया गया है।

सम्बन्धित साहित्य के लाभ :–

1. विषय का व्यापक एवं गहन ज्ञान प्राप्त होता है।

2. पुनावृति का विकास।

3. समस्या नियोजन में सहायक।

4. गुणात्मक सुधार की समस्याएं

5. पुनरावृति से सुरक्षा

2.5 शोध अध्ययन से सम्बधित साहित्य

1. कर्म योगी, आर.पी. (2016) व्याख्यान के अतिरिक्त अन्य शिक्षण–प्रविधियाँ, शिपिरा पत्रिका वर्ष 55 अंक 8 पे. 36–37।

उद्देश्य – व्याख्यान विधि के अतिरिक्त उद्देश्यों की प्राप्ति के साधन खोजना तथा अन्य विधियों का उपयोग करना।

2. व्याख्या विधि में शिक्षण प्रक्रिया का अध्ययन करना।

निष्कर्षः– विशिष्ट और सारगर्मित तथ्य/प्रश्न का प्रस्तुतीकरण अन्य साधनों द्वारा व्याख्यान विधि में अन्य शिक्षण विधियों के प्रयोग से शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावी बनाया।

2. शर्मा उषा (2016) ''शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय एवं शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय के प्रशिक्षाणार्थियों के शिक्षण कौशल एवं शैक्षिक तनाव का अध्ययन।'' उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान मान्य विश्वविद्यालय गांधी विद्या मन्दिर पी.एच.डी.।

उद्देश्य :–

1. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय एवं शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय के प्रशिक्षणार्थियों के शिक्षण कौशल का अध्ययन।

2. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय एवं शिक्षक महाविद्यालय के पुरूष प्रशिक्षणार्थियों के शिक्षण कौशल का अध्ययन करना।

निष्कर्ष :–

1. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय एवं शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय के प्रशिक्षणार्थियों के शिक्षण कौशल मापनी में अंतर पाया गया।

2. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय एवं शिक्षक महाविद्यालय के पुरूष प्रशिक्षणार्थियों के शिक्षण कौशल में सार्थक अंतर पाया गया।

3. वर्मा, हरिश कुमार, (2015), ''विज्ञान शिक्षण नई विधाएं'' शिविरा पत्रिका वर्ष – 55 अंक 8 पे. न. 7.8

उद्देश्य :–

1. विज्ञान शिक्षण में सहायक सामग्री नई शिक्षण विधाओं का अध्ययन करना।

2. कुछ नवाचारो नवीनतम सहायक सामग्री के उपयोग से विज्ञान शिक्षण को रूचिशील बनाया जाये।

4. माधवी, के.वी. (2014) :–''Studyskill Success (sss) Software के माध्यम से पठन कौशल में सुधार'' गीतम विश्वविद्यालय पी.एच.डी.।

उद्देश्य :–

1. शोध कार्य में अलग–अलग तकनीकि अंग्रेजी विषय का पठन कार्य करना।

2. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में लेखन कौशल का विकास करना।

निष्कर्ष :–

1. SSS के माध्यम से पठन कार्य करने वाले विद्यार्थियों में पठन कौशल विकास स्तर पाया गया।

2. माध्यमिक स्तर पर लेखन कौशल में अन्तर पाया गया।

5. पवार.पू. (2012) ''सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों में सेवारत अध्यापको की शैक्षिक नवाचारों के प्रति जागरूकता का अध्ययन।'' जैन विश्वीभारती विश्वविद्यालय पी.एच.डी.

उद्देश्य :–

1. मूल्य शिक्षा के प्रति सेवारत महिला व पूरूष अध्यापकों की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2. नवीन शिक्षण विधियों के प्रति सेवारत महिला व पुरूष अध्यापकों की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

निष्कर्ष :–

1. पर्यावरण शिक्षा के प्रति सेवारत महिला व पुरूष अध्यापकों की जागरूकता में सार्थक अंतर पाया तथा पर्यावरण शिक्षा के प्रति महिला अध्यापिकाएं अधिक जागरूक है।

2. नवीन शिक्षण विधियों के प्रति सेवारत महिला व पूरूष अध्यापकों की जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया अर्थात् महिला व पूरूष अध्यापक समान रूप से नवीन शिक्षण विधियों के प्रति जागरूक है।

6. शर्मा, सुमन (2011) ''उच्च माध्यमिक स्तरीय शिक्षकों को आधुनिक शिक्षण विधियों की जानकारी एवं उनका शिक्षण में प्रयोग'' जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय एम.एड.।

उद्देश्य :–

1. उच्च माध्यमिक स्तर पर शिक्षकों में आधुनिक शिक्षण विधियों की जानकारी का अध्ययन करना।

2. उच्च माध्यमिक स्तर पर शिक्षकों द्वारा आधुनिक शिक्षण विधियों के प्रयोग का अध्ययन करना।

निष्कर्ष :–

1. उच्च माध्यमिक स्तर पर सरकारी व निजी विद्यालयों के शिक्षकों में आधुनिक शिक्षण विधियों की जानकारी में कोई सार्थक।

7. पॉल, बालकृष्ण (2009) ''सेवारत प्राथमिक शिक्षको को ''सूक्ष्म शिक्षण कौशलो का उनके समायोजन और आत्म सम्प्रत्यय के सम्बन्ध में अध्ययन'', पी.एच.डी.,पामिया जामिया विश्वविद्यालय नई दिल्ली पी.एच.डी.।

उद्देश्य :–

1. सेवारत प्राथमिक शिक्षको के सूक्ष्म शिक्षण कौशल का अध्ययन करना।

2. प्राथमिक शिक्षकों के समायोजन और आत्म–सम्प्रत्यय सम्बन्ध का अध्ययन करना।

निष्कर्ष :–

1. पुरूष व महिला अध्यापको में शिक्षण कौशल में सार्थक अंतर नही होता।

2. लिंग के आधार पर प्राथमिक शिक्षकों के समायोजन में अंतर पाया गया।

8. प्रोमिला (2009) ''माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में हिन्दी भाषा के कौशलो का विकास एक प्रयोगात्क अध्ययन'' जे.बी. जैन, कॉलजे सहारनपुर पी.एच.डी.।

उद्देश्य :–

1. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में श्रवण कौशल का विकास करना।

2. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियो मे पठन कौशल का विकास करना।

निष्कर्ष :–

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में नवीन शिक्षण विधियों द्वारा शिक्षण कराने से उनकी उपलब्धि स्तर उन्नत हुआ है।

(9) गुप्ता, निशी, श्रीवास्तव कुमकुम (2008) ''हाई स्कूल स्तर पर नागरिक शास्त्र के प्रभावि शिक्षण हेतु शिक्षण कौशलो की वांछनीयता'', लखनऊ विश्वविद्यालय पी. एच.डी.।

उद्देश्य :–

1. नागरिक शास्त्र विषय मे प्रभावी शिक्षण हेतु शिक्षण कौशलो का अध्ययन करना।
2. नागरिक शास्त्र विषय में व्याख्यान कौशल का अध्ययन।

निष्कर्ष :–

1. नागरिक शास्त्र शिक्षण में पाठ की प्रस्तावना, विषय वस्तु का प्रस्तुतीकरण पाठ विस्तार में छात्रों की सहभागिता पायी गई।
2. शिक्षण क्रियाओं हेतु उदाहरण प्रयोग कौशल, सहायक सामग्री प्रयोग तथा व्याख्यान कौशल वांछित है।

10 सिंह विनोद कुमार (2008) ''प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण कौशल दक्षता के स्तर का अध्ययन'' लखनऊ विश्व विद्यालय पी.एच.डी.।

निष्कर्ष :–

1. शिक्षण प्रक्रिया की प्रभाविकता का अध्ययन करना।
2. शिक्षण के ज्ञान कौशल योग्यताएं व अभिव्यक्ति का अध्ययन करना।

निष्कर्ष :–

प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों में शिक्षण कौशल क्षमता 80 प्रतिशत है।

11.अनुथामा. बी. (2007) ''चयनित भाषा शिक्षण विधियों का विश्लेषण व्याकरण शब्दकोष एवं सम्प्रेषण कौशल हेतु नीवन उपागम''। अन्नविश्वविद्यालय चैन्नई, पी. एच. डी.

उद्देश्य :–

1. भाषा शिक्षण विधियों के विश्लेषण का मूल्याकंन करना।
2. व्याकरण शब्दकोष शिक्षण हेतु नवीन उपागम के प्रभाव का अध्ययन करना।

निष्कर्ष :–

1. भाषा शिक्षण विधियों के विश्लेषण करने पर शिक्षण सुगम होना पाया गया।

2. व्याकरण शब्दकोष शिक्षण हेतु नवीन उपागमों का प्रयोग करने पर शिक्षण प्रभावी व अधिगम अधिक तथा स्थायी रूप से पाया जाता है।

12. बिन्धु, सी. एम. (2007) ''प्राथमिक विद्यालयों शिक्षकों के कौशल दबाव व संतुष्टि के मध्य सह–सम्बन्ध का अध्ययन किया'' चौधरी चरण सिहं विश्वविद्यालय, पी.एच.डी.

उद्देश्य :–

1. प्राथमिक विद्यालयी शिक्षकों के कौशल दबाव व व्यवसाय संतुष्टि के मध्य सह–सहसम्बन्ध व अन्तर ज्ञात करना।,

निष्कर्ष :–

1. पुरूष व महिला विद्यालयी शिक्षकों की व्यवसाय संतुष्टि में अंतर है।
2. व्यवसाय संतुष्टि तथा कौशल दबाव में धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

13. पाण्डेय,श्रमा सिंह रीना (2006) ''शिक्षा शास्त्र विभाग'' इलाहाबाद वि.वि पी.एच.डी.।

उद्देश्य :–

1. स्नातक स्तर पर कार्यरत शिक्षको की वर्तमान शिक्षण विधियो के उपयोग का अध्ययन करना।

निष्कर्ष :–

1. 90 प्रतिशत व्याख्या विधि प्रस्तुत करते है।

2. 13.33 प्रतिशत शिक्षक विषय–बोध हेतु श्रव्य दृश्य साधनो का प्रयोग करते है।

14. जॉनफेशन, के एण्ड रॉकपा, एस (2006) ''दा इफैक्ट ऑफ दा स्टडी स्किल्स आनरीडींग काम्परेहेन्सन दा जनरल ऑफ इंग्लिश लेंगुए टीचींग।'' करमनशाह आजाद विश्वविद्यालय पी.एच.डी. ।

उद्देश्य :–

1. पठन अर्थ ग्रहण योग्यता पर पठन कौशलों के ज्ञान के प्रभाव का अध्ययन करना।

निष्कर्ष :–

1. पठन कौशलो व पठन अर्थ ग्रहण योग्यता में कोई सार्थक सम्बंध नही हो।

15. शर्मा पृ. (2006) ''माध्यमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान शिक्षण कौशलों का अध्ययन'' राजस्थान विश्वविद्यालय पी.एच.डी.।

उद्देश्य :–

जयपुर अलवर जिले के सामाजिक विज्ञान के शिक्षकों द्वारा प्रयुक्त शिक्षण कौशल का अध्ययन करना।

निष्कर्ष :–

जयपुर जिले के शिक्षक अपने शिक्षण में सर्वाधिक प्रश्न कौशल का प्रयोग करते है अलवर जिले के शिक्षक अपने शिक्षण में सर्वाधिक प्रयोग प्रश्न कौशल का करते है।

16. सानिया सीलन ए. (2005) ''1950 से तमिलनाडु एवं श्रीलंका में उच्च शिक्षा की योजनाओं एवं अभ्यासों में मातृभाषा की स्थिति का अध्ययन'' अलगप्पा युनिवर्सिटी पी.एच. डी.

उद्देश्य :–

1. मात्रभाषा को अनुदेशन का माध्यम बनाने के विषय में युनिवर्सिटी कॉलेज के छात्रों एवं शिक्षकों की राय जाननां

2. तमिलनाडु व श्रीलंका के विश्वविद्यालयों में अनुदेशन हेतु मातृभाषा के महत्व को संक्षेप में बतानां

निष्कर्ष :–

1. तमिल भाषा अनुदेशन के माध्यम के रूप में अति आवश्यक है। इससे ना केवल शिक्षा का स्तर सुधरेगा बल्कि इससे अधिगम प्रभावशाली होगा।

17. मुथैया, N (2001) ''सेवापूर्व छात्राध्यापकों में शुद्ध स्वर ध्वनि वाले शब्दों के उच्चारण को प्रोत्साहित करना।'' अन्ना विश्वविद्यालयी पी.एच.डी.

उद्देश्य :–

1. छात्रों को सही व अच्छी अंग्रेजी बोलने योग्य बनाना।

2. आदर्श वक्ता के रूप में छात्रों में सही अक्षर ध्वनी को बोलने की योग्यता प्रोत्साहित करना।

निष्कर्ष :–

1. छात्रों का भाषा में ध्वनियों का सही प्रयोग नहीं पाया गया सही व नियमित शिक्षण नही दिया गया।

18. शर्मा, यादवेन्द्र के व कुमार नरेश (1993) ''शिक्षण कौशलों के सापेक्षित महत्व हेतु माध्यमिक विद्यालयी शिक्षकों के विचारों का अध्ययन करना।'' बुदेलखण्ड युनिवर्सिटी पी.एच. डी.

उद्देश्य :–

1. माध्यमिक स्तर पर प्रभावी शिक्षण हेतु उपयुक्त सार्थक शिक्षण कौशलों की पहचान करना।
2. विविध शिक्षण कौशलों के सापेक्षित महत्व का निर्धारण करना।

निष्कर्ष :–

1. तीन शिक्षण कौशलो–छात्रों की सहभागिता प्रश्नोतर और शिक्षण सामग्री के प्रयोग को अधिक महत्वपूर्ण माना।
2. प्रस्तावना पाठ का विकास व समापन कौशल को कम महत्वपूर्ण माना।

19. कुमारी, नंदा, पी. (1992) ''ए डायग्नोस्टिक स्टडी ऑफ एटर्स इन रिटन हिन्दी ऑफ सेकेन्ड्री स्टुडेन्ट्स ऑफ सैन्ट्रल स्कूल इन दा मद्रास रीजन'' युनिवर्सिटी ऑफ कालीकट पी.एच.डी.

उद्देश्य :–

1. त्रुटियों का व्याकारण कौशलों के अनुसार वर्गीकृत करना।
2. त्रुटियों के स्त्रोत और कारणों का अध्ययन करना।

निष्कर्ष :–

1. केरल और तमिलनाडु के हिन्दी व अहिन्दी छात्रों के मध्यमानों में सार्थक अंतर प्राप्त हुआ।

20 दुबे, ओम बाबू (1990) ''ए कम्पेरेटिव स्टडी आफ ए प्ले वे सैल्फ लर्निंग टैक्नीक एण्ड दा ट्रेडीनशनल मैथड आफ टींचिंग हिन्दी एट इनीशीयल प्राईमरी स्टेज'' युनिवर्सिटी ऑफ राजस्थान पी.एच.डी.

उद्देश्य :–

प्राथमिक स्तर पर खेल विधि द्वारा स्वयं सीखने की विधि एवं परम्परागत शिक्षण विधि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

निष्कर्ष :–

1. खेल विधि द्वारा स्वयं सीखने की विधि, परम्परागत विधि की अपेक्षा प्रभावशाली सिद्ध हुई।

विदेशों में किये गये शोध कार्य :–

21. इमामी मरियम रेहानिया, नुसरत (2014) ''राज्य माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं में पठन कौशल विकास का मुल्यांकन तथा अभिभावकों की इसमें भूमिका अवरोध चुनौतिया'' ईरान विश्वविद्यालय पी.एच.डी.।

उद्देश्य :–

1. ईरान के माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं में पठन कौशल विकास का अध्ययन करना।
2. अभिभावकों की भूमिका का अध्ययन करना

निष्कर्ष :–

माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के पठन कौशल का स्तर अत्यधिक अवांछनीय पाया गया।

22. लिण्डबर्ग. जे. ओल. (2009) ''ऑन लाईन कम्यूनिटिज एण्ड टीचर प्रोफेशनल डवलपमेंट मैथड फार इन्प्रूवड, एजूकेशन डिलीवर'' पी.एच.डी।

उद्देश्य :–

1. शिक्षण अभ्यास पर सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकि का प्रभाव ज्ञात करना।
2. नवचारित कौशलो का प्रतिदिन शिक्षण अभ्यास में प्रभाव ज्ञात करना।

निष्कर्ष :–

1. सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकि का शिक्षकों की कार्य क्षमता पर सकारात्मक प्रभाव पाया गया।

2. तकनीकि का शिक्षा में समन्वय करने पर शिक्षाको एवं विद्यार्थियों के ज्ञान एवं कौशल में वृद्धि होती हैं

23. सी. बाम्बस, ल्योनिदास (1988) ''द ग्रीक के स्कूलों में सुकरात पद्धति के विकास तथा छात्रों की पहचान पर प्रभाव'' मैकगिल विश्वविद्यालय पी.एच.डी.।

उद्देश्य :–

जातीय पहचान, सामाजिक एकीकरण और संस्थागत उपलब्धियों का अध्ययन करना।

निष्कर्ष :–

1. सुकरात पद्धति के द्वारा छात्रों का विकास होना पाया गयां

तृतीय अध्याय

अनुसंधान प्रक्रिया एवं रूपरेखा

3.1 प्रस्तावना :–

अनुसंधानकर्ता द्वारा अनुसंधान प्रक्रिया में प्रवेश करने से पूर्व उसकी विधि का निश्यच एवं प्रक्रिया का निर्धारण करना आवश्यक है। वैज्ञानिक अनुसंधानों की भांति ही शिक्षा के क्षेत्र में किये जाने वाले समस्त अनुसंधानों के लिए अनुसंधान प्रक्रिया का रूप निर्धारित करना आवश्यक है। किसी व्यापार को चलाने के लिए योजना संगठन तथा संचालन की आवश्यकता होती है।

दोनों क्षेत्रों में विशेष लगन, चतुरता प्रबंध की योजना तथा विशेष अनुभव आवश्यक है। शोध कार्य के प्रारम्भ से अंत तक सावधानी के साथ योजना बनाने पर ही उससे प्राप्त निष्कर्षो पर विश्वास किया जा सकता है और ऐसी दशा में ही निष्कर्ष पर विश्वास किया जा सकता है और ऐसी दशा में निष्कर्ष प्रकाशन योग्य स्थिति तक पहुंचा सकते है।
अनुसंधान एक विशेष उत्तरदायित्व का कार्य है। अनुसंधान का कर्तव्य है कि अपने शोध द्वारा सही निष्कर्ष प्रस्तुत करे। इस कत्वर्य का पालन करने के लिए कार्य करने से पहले योजना बनाना आवश्यक है। अनुसंधानकर्ता का कर्तव्य है कि वह अपने शोध द्वारा सही निष्कर्ष प्रस्तुत करे। इस कर्तव्य का पालन करने के लिए कार्य करने से पहले योजना बनाना आवश्यक है। किसी भी सफलता उसकी योजना योग्यता एवं कार्य विधि पर निर्भर करती है। बिना योजना बनाए शोध करना उस पथिक के समान है जिसे मालूम नहीं की उसे कहाँ जाना है इससे वह आसानी से भटक सकता है एक शोधकर्ता के पास समय व धन की कमी होते हुए भी शोधकार्य में विश्वसनियता एवं यथार्थता लाना तभी सम्भव होगा जबकि इसकी पूर्व में ही योजना बनाई जाये।

3.2 अनुसंधान का अर्थ :–

अनुसंधान को अंग्रेजी में रिसर्च कहते है। जो दो शब्दों से रि+सर्च से बना है। इसमें रि का अर्थ ''पुनः'' तथा सर्च का अर्थ ''खोजना'' है। अर्थात् किसी तथ्य की पूरे मनोयोग से खोजना।

अनुसंधान का अर्थ पूर्णतया तथ्यों, ज्ञान एवं घटनाओं की खोज करना ही नही है अपितु नवीनतम तथ्यों के सन्दर्भ में स्वीकृत निष्कर्षो के परिशोधन हेतु आलोचनात्मक ढ़ग से एवं विस्तारपूर्वक परिक्षण एवं अन्वेषण करना भी उसके अन्तर्गत आता है इसलिये इसे रि+सर्च (पुनः) सर्च (खोज) की संज्ञा दी गई है।

प्रस्तुत अध्ययन में यह बताया गया है कि अध्ययन में किस शोध विधि का चयन किया गया है तथा न्यादर्श के चयन में कौनसी विधि का चयन व उपयोग किया गया है तथा शोध में कौन–कौनसे उपकरण प्रयुक्त किये गये है। उनका विवरण तथा किन सांख्यिकी विधियों का चयन किया गया है अनुसंधान एक वैज्ञानिक खोज है जो क्रमबद्ध प्रयासो द्वारा ईमानदारी के साथ बुद्धिपूर्वक पूर्णरूपेण की जाती है।

3.3 अनुसंधान की परिभाषाएँ :–

1. मैकग्रेथ एवं वाटसन के अनसार :– अनुसंधान एक प्रक्रिया है जिनसे प्रविधि का प्रयोग किया जाता है जिसके निष्कर्षों की उपयोगिता है ज्ञान प्राप्ति के लिये प्रोत्साहित करे समाज के लिये सहायक हो तथा मनुष्य को अधिक प्रभावशाली बना सके। समाज तथा मनुष्य अपनी समस्याओं को प्रभावशाली ढ़ग से टल कर सके।

2. रेडमैन गौरी के अनुसार :–नवीन ज्ञान की प्राप्ति हेतु व्यक्तित्व प्रयत्न को हम अनुसंधान कहते है। तत्व चर अथवा परिस्थितियों हो सकती है उनकी विश्लेषण द्वारा जानकारी प्राप्त की जाती है। उसके बाद विश्लेषण द्वारा ही उनमें से कुछ अत्यन्त महत्वपूर्ण चरो का चुनाव करके उनका समस्या समाधान के रूप अथवा प्रश्नों के सम्भावित उत्तरों के रूप में परिक्षण किया जाता है।

3. स्पार तथा स्वेसन क अनुसार :– कोई भी विद्धवतापूर्वक अनुसंधान की सत्य के लिये, तथ्यों के लिये निश्चितओं के लिये अन्वेषण हैं।

4. पी.वी. यंग के अनुसार :– ''कोई तक ऐसी विद्धवतापूर्वक अनुसंधान की सत्य के लिये, तथ्यों के लिए निश्चितताओं के लिये अन्वेषण है।

5. पी.एम. बुक के अनुसार :–

अनुसंधान किसी समस्या के प्रति ईमानदारी एवं व्यापक रूप में समझादारी के साथ की जाती है जिसमें तथ्यों तथा अर्थों की जानकारी की जाती है। अनुसंधान की उपलब्धि तथा निष्कर्ष प्रमाणिक पुष्टियोग्य होते है जिससे ज्ञान में वृद्धि होती है।

3.5 परिकल्पना :–

परिकल्पना शब्द का अर्थ एक उपकथन से होता है जो समस्या के समाधान की अवधारणा होती है और शोधकर्ता उसकी पुष्टि करने का प्रयास करता है। परिकल्पना के कथन का स्वरूप एक व्याख्या के रूप में होता है जो अवलोकन या सिद्धान्त पर आधारित होता है, जब किसी सम्भावित सिद्धान्त की प्रदतो तथा प्रमाणों के आधार पुष्टि की जाती है तब उसे परिकल्पना की संज्ञा दी जाती है।

परिकल्पना को अग्रेंजी में Hypothesis कहते है। जो दो शब्दों से मिलकर बना है हाइपो (Hypo) + थीसिस (Thesis) = (Hypothesis (हाइपोथिसीस)। हाइपो का अर्थ है –सम्भावित या जिसकी पुष्टि की जाये तथा थीसिस का अर्थ – समस्या के समाधान का कथन।

इस प्रकार हाइपोथीसिस का शाब्दिक अर्थ उस सम्भावित कथन से है जो समस्या का समाधान प्रस्तुत करता है। परिकल्पना ऐसे समाधान का प्रस्तुत करती है जिसकी पुष्टि प्रदतो के आधार पर की जा सके।

3.5.1 परिकल्पना की परिभाषा :–

1. करलिंगर के अनुसार :–''एक परिकल्पना दो या अधिक चरों के सम्बन्ध के विषय में कल्पनात्मक कथन होता है।''

2. ब्रूस डब्लयू टरमन के अनुसार :– ''परिकल्पना की परिभाषा अपेक्षित घटना के रूप में जा सकती है जो चरो में माने हुए सम्बन्ध का सामान्यकरण होती है।

3. जेम्स ई. ग्रीटन क अनुसार : – ''परिकल्पना संभावित माना हुआ समस्या का हल है, जिसकी व्याख्या उस परिस्थिति से निरीक्षण के आधार पर की जा सकती है।''

3.5.2 परिकल्पना के उद्देश्य :–

1. परिकल्पना शोध के लिये दिशा प्रदान करती है उपयोगी प्रदतो के संकलन में सहायता प्रदान करती है।[4]

---

4 कपिल, एच. के (2001) ''अनुसंधान विधियाँ'' वेदान्त पब्लिकेशन लखनऊ संस्करण 11पृ. स. 21

2. परिकल्पना अध्ययनकर्ता को संवेदनशील बनाती है जिससे वह अनावश्यक परिस्थितयों तथा प्रदतों के संकलन से बच जाता है।

3. परिकल्पना द्वारा शोधकर्ता की समस्या को सही रूप में समझने में सहायता मिलती है तथा समस्या का रूप स्पष्ट होता हैं

4. परिकल्पना द्वारा शोध के निष्कर्षो के प्रतिपादन में सहायता मिलती है।

3.5.3 परिकल्पना के प्रकार :–

व्यवहार वैज्ञानिकों ने अपने अनुसंधानों में कई प्रकार की परिकल्पनाओं का प्रयोग करते है विभिन्न विद्धानों ने कई प्रकार से उनका वर्णन व उल्लेख किया है।

साधारण अध्ययन में दो प्रकार की परिकल्पनाएं उपयोग में लायी जाती है।

1. अप्रायोगिक परिकल्पना

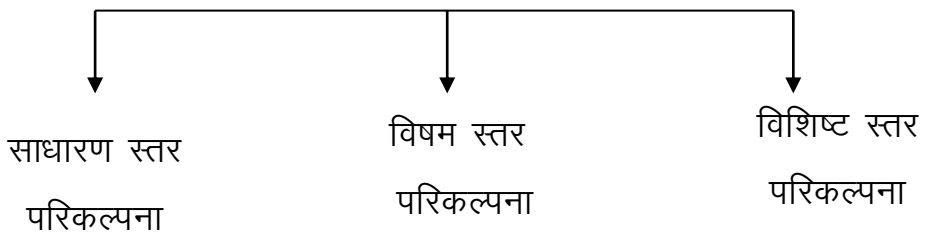

2. प्रायोगिक परिकल्पना

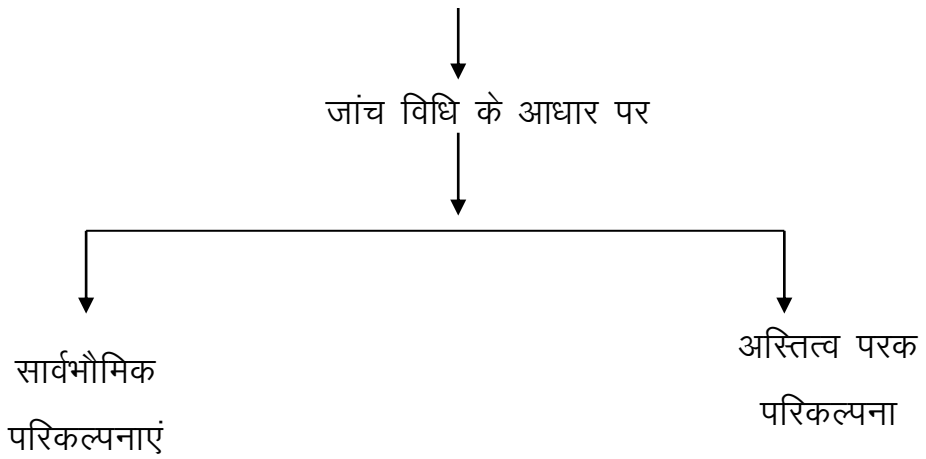

कथन के आधार पर प्रायोगिक परिकल्पनाएं तीन प्रकार की होती है–

1. प्रायोगिक धनात्मक परिकल्पना :– यह परिकल्पना दो या दो से अधिक समूहों के अन्तर में सम्बन्ध में होती हैं। इस प्रकार की परिकल्पना मे कथन का रूप घनात्मक होता हैं।

2. प्रायोगिक ऋणात्मक परिकल्पना :– यह परिकल्पना दो या दो से अधिक चरों के आधार पर सम्बन्ध में होती है इस प्रकार की परिकल्पना में कथन का स्वरूप ऋणात्मक होता हैं।

3. प्रायोगिक शून्य परिकल्पना :– शून्य परिकल्पना वह परिकल्पना है जो यह बताती है कि दो समूहों या दो चरों का आपसी अन्तर शून्य है अर्थात् दो चरो ंया दो समूहों में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।

3.4 शोध में प्रयुक्त परिकल्पनाएं :–

1. इंटर्नशिप में छात्राध्यापक व छात्राध्यापिकाओं में कौशलों से सम्बन्धित दक्षता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

2. इंटर्नशिन के दौरान प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षण विधियों तथा सम्बन्धित कौशलों के अनुप्रयोग में सार्थक अंतर नही पाया जाता है।

3. इंटर्नशिप के दौरान प्रशिक्षणार्थियों द्वारा कक्षा–कक्ष में किये जाने वाले विभिन्न कार्यकलापों में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

3.6 न्यादर्श :–

किसी भी शोध में महत्वपूर्ण न्यादर्श होती है क्योंकि किसी भी अनुसंधानकर्ता के लिये यह सम्भव नही है कि वह पूरे जनसंख्या के समग्र के सभी व्यक्तियों को अपनी खोज का विषय बना सके। इसलिए जनसंख्या जनसंख्या में से कुछ व्यक्तियों का चयन कर लिया जाता है जो कि समग्र का प्रतिनिधित्व करे और जिन पर किये गये अध्ययन के आधार पर समग्र के लिए चयनित व्यक्तियो के ऐसे समूह को न्यादर्श कहते है। न्यादर्श के अनेक उपयोग है। पूरे समग्र की तुलना में न्यादर्श के उपयोग से समय की काफी बचत होती है। समय की मितव्ययता होने से अधिकतम अनुसंधानों में न्यादर्श लेकर ही अध्ययन करते है।

3.6.1 न्यादर्श की परिभाषाएं :–

1. पी.वी.यंग के अनुसार :– ''एक सांख्यिकीय निर्देशन सम्पूर्ण समूह योग का एक लघुकृत आकार का चित्र है जिससे कि निर्देशन लिया जाता है''

गुड एवं हॉट के अनुसार :– ''न्यादर्श एक विस्तृत समूह का छोटा प्रतिनिधि होता हैं''

3.6.2 न्यादर्श के लाभ :–

1. न्यादर्श के द्वारा सर्वेक्षण की आर्थिक लागत कम होती है।
2. न्यादर्श के द्वारा प्रदत सम्भव हो पाते है जो समग्र के अध्ययन से सम्भव नही हो पातें
3. प्रदतो व प्रक्रियाओं की जांच सरल हो जाती है।
4. न्यादर्श से परीक्षण में सुविधा रहती है।
5. न्यादर्श के आधार पर एकत्रित आकड़ो का विश्लेषण तथा प्रदर्शन सम्भव व सरल होता है निष्कर्षो की विवेचना सम्भावना सिद्धान्त के आधार पर की जा सकती है।

3.6.3 न्यादर्श की सीमाए :–

1. न्यादर्श एक जटिल वैज्ञानिक पद्धति है इसके लिए तकनीकि ज्ञान की आवश्यकता होती है।
2. जनसंख्या का स्वरूप सीमित होने पर न्यादर्श द्वारा अध्ययन पद्धति दोषपूर्ण हो जाती है।
3. न्यादर्श में पक्षपात की सम्भावना रहती है।
4. जनसंख्या क विषम जातीय होने पर न्यादर्श द्वारा अध्ययन पद्धति दोषपूर्ण हो जाती है।[5]

---

5. पी.वी.यंग ''फेक्ट फाइनडिंग वॉश प्यूपिल पृ. स. 35

3.6.4

न्यादर्श चयन की विधियों

सम्भाव्य न्यादर्श

1. यादृच्छिक न्यादर्श
2. स्तरीकृत न्यादर्श
3. गुच्छ न्यादर्श
4. द्विज न्यादर्श
5. क्रमबद्ध न्यादर्श

असम्भाव्य न्यादर्श

1. अंश न्यादर्श
2. सोद्वेश्य न्यादर्श
3. आकस्मिक न्यादर्श
4. सम्पूर्ण न्यादर्श
5. निर्णित न्यादर्श

3.6.5 अध्ययन के न्यादर्श

30. प्रशिक्षणार्थी

(15 छात्राध्यापक)

(15 छात्राध्यापिका)

3.7 अनुसंधान की विधियां :–

शैक्षिक अनुसंधान की अनेक वैज्ञानिक विधियां है कोई भी विधि किसी अन्य विधि से श्रेष्ठ नहीं कही जा सकती है, क्योंकि प्रत्येक विधि की एक महत्वपूर्ण भूमिका है अतः शोधकर्ता के लिए यह आवश्यक है कि वह जिस विधि का चयन करे वह उसके लिए उपयुक्त हो।

यदि अनुसंधानकर्ता अपनी विधि की व्याख्या स्पष्ट रूप से नहीं कर सकता है तो परिणामों के अत्यधिक अनिश्चित एवं असामान्य होने की सम्भावना अधिक रहती है। शोध विधी से तात्पर्य एक निश्चित अवस्था के आधार पर अध्ययन करने की प्रणाली से है, सामान्यतः किसी अनुसंधानकार्य में निम्नलिखित विधियों को प्रयोग किया जाता है।

1. ऐतिहासिक विधि।

2. प्रायोगिक विधि।

3. सर्वेक्षण विधि।

3.7.1 अनुसंधान विधियाँ

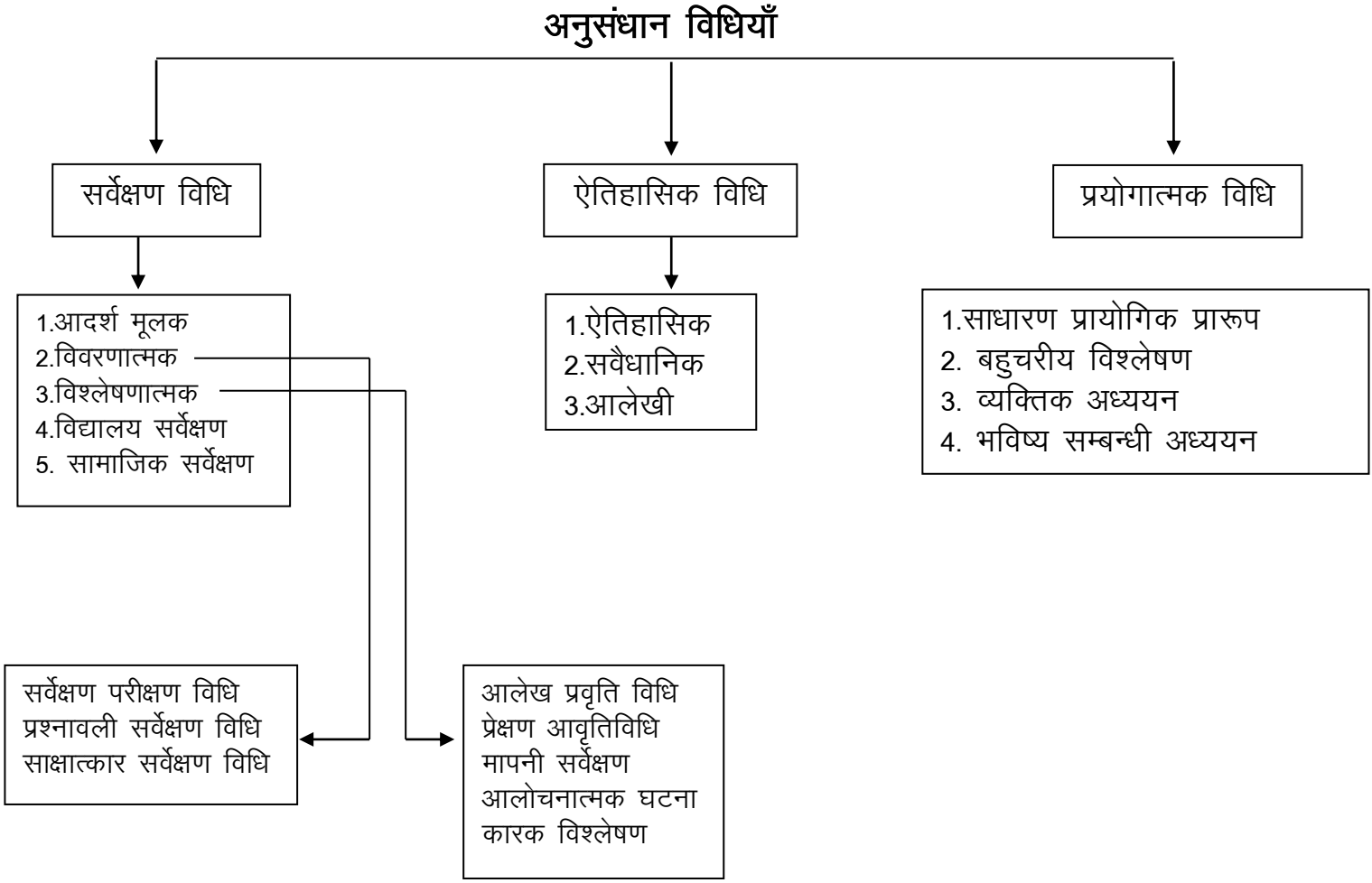

3.8 अध्ययन में प्रयुक्त विधि :–

सर्वेक्षण विधि का अर्थ :–

शब्द सर्वे (Survey) की उत्पति शब्दों 'Sur' या 'Veeir' तथा 'Veiror' से हुई हैं। जिसका अर्थ क्रमशः 'ऊपर से'' और देखना होता है। सामान्य सर्वेक्षण वर्तमान में क्या रूप है ? इससे सम्बन्धित है। इसका क्षेत्र बहुत व्यापक है। वर्तमान में क्या स्वरूप है इसकी व्याख्या व विवेचना करता है। सामान्यतः सर्वेक्षण की परिस्थितियों अथवा सम्बन्ध जो वास्तव में वर्तमान है कार्य जो हो रहा है प्रक्रिया जो चल रही। इसी के अध्ययन से इसका सम्बन्ध है। विद्वानों ने विभिन्न नामों को जैसे नार्मेटिव, डेस्क्रिप्टिव 'सर्व' स्टेटस या ट्रेन्ड्स (प्रचल) आदि को अनुसंधान के विवरण के लिए उपयोग किया गया है।

3.8.1 परिभाषाएं :–

1. मैकमिलन के अनुसार :– ''सर्वेक्षण एक संगठन की प्रक्रिया है इसका उस समय प्रयोग किया जाता है जब अनुसंधान प्राथमिक रूप में कार्यकरण सम्बन्ध से सम्बन्धित नहीं हाती है।

2. ट्रेवर्स के अनुसार :– ''सर्वेक्षण विधि वर्तमान कार्यो की प्रकृति को सुनिश्चित करने की विधि हैं।''

3. एम. एल. विटनी के अनुसार :– ''सर्वेक्षण आधुनिक सामाजिक विज्ञान की शब्दावली के अनुसार एक प्रकार के व्यवस्थित प्रयास है जिसमें कि वर्तमान सामाजिक संस्थानों के स्तर समूह तथा क्षेत्रों के सम्बन्ध में विवेचन व्याख्या आदि से सम्बन्धित बातो का उल्लेख किया जाता है।

3.8.2 सर्वेक्षण विधी के उद्देश्य एवं उपयोग :–

यद्यपि अनुसंधान में सर्वेक्षण विधि का मुख्य उद्देश्य यह होता है ''वर्तमान में इनका रूप क्या है ? अर्थात् समस्या या घटना का विवरण करता है, लेकिन बहुत से सर्वेक्षण केवल वर्तमान स्थितियों के विवरण की सीमा से बाहर होते है। उदाहरण के लिए

पाठ्यक्रमों का सर्वेक्षण न केवल पाठ्यक्रम की अच्छाईयों या निर्बलताओं की सूचनाओं के बारे में सहायता करती है अपितु परिवर्तन लाने के लिए सुझाव भी दे सकती है।

विवरणात्मक सर्वेक्षण या सामान्य सर्वेक्षण अनुसंधानकर्ता का प्रथम कार्य यह है जिससे वह अधिक प्रबल नियंत्रण वस्तुपरक विधि प्रयोग में ला सकते है।

3.8.3 सर्वेक्षण विधि के प्रमुख सोपान :–

1. उद्देश्यों का निर्धारण।
2. उपकरणों एवं प्रविधियों का चयन।
3. उपकरणों प्राक् परीक्षण।
4. प्रतिदर्श का चयन।
5. सर्वेक्षण कार्य की विधियों का निर्धारणं
6. दत्त संकलन एवं विश्लेषण।

3.8.3 सर्वेक्षण विधि का लाभ :–

सर्वेक्षण विधि के लाभ निम्नलिखित हैः–

1. सर्वेक्षण अध्ययन वर्तमान स्थितियों, स्तरों तथा समस्याओं का अध्ययन करने के लिये उपयुक्त है।

2. सर्वेक्षण अध्ययन भावी विकास क्रम या प्रवृतियों का पूर्वानुमान देता है। यह वर्तमान तथा भविष्य आवश्यकताओं की ओर प्रभावी रूप से ध्यान आकर्षित करने की क्षमता रखते है।

3. इन अध्ययनों के लिए वांछित उपकरण सरल तथा उपयोगी होते है इनका उपयोग व प्रशासन सरल होता है।

4. आवश्यक उपकरणों के माध्यम से संग्रहित प्रदतों का विश्लेषण तथा व्याख्या सरल होती है इनसे सहज ही निष्कर्ष निकाले जा सकते है।

5. इस प्रकार के अध्ययनों के लिए उपकरणों का विकास व निर्माण करना भी अधिक कठिन नहीं है।[6]

---

6 रायजादा, एस. एस. बी वर्मा वन्दना 2008 (2008) ''शिक्षा में अनुसंधान के आवश्यक तत्व'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी पृ. स. 92

3.8.4 सर्वेक्षण विधि की सीमाएँ :–

सर्वेक्षण विधि के लाभ के साथ–साथ कुछ सीमाए भी है जो निम्न प्रकार है–

1. सर्वेक्षण प्रायः असम्भव एवं बिखरे होते है अतः इन्हें पूर्ण रूप से संकलित करके किसी सिद्धान्त का निर्माण नहीं किया जा सकता।

2. सर्वेक्षण विधि से समाज के अंश का अवलोकन हो पाता है इससे समस्त सत्य को समझना मुश्किल है।

3. सवेक्षण विधि में घटना का दृष्टिगोचर होना आवश्यक है लेकिन अनुसंधानकर्ता वहां उपस्थित हो ऐसा आवश्यक नही है क्योंकि कुछ घटनाएं जीवन से सम्बन्धित होती है उन्हें कोई देख नहीं सकता। अतः पूछताछ करके ही काम चलाना पड़ता है। कई बार लोग इनके बारे में असत्य बोलते है इसलिए यह विधि पूर्ण विश्वसनीय नही हो सकती है।

4. सर्वेक्षण विधि से ऐसी सुचनाएं प्राप्त नहीं होती जिनसे तथ्यों का गहराई से अध्ययन हो सकें

5. सर्वेक्षण में अभ्यार्थियों के गलत या सामाजिक रूप से मान्य उतर देने की संभावना होती है।

3.9 उपकरण एवं प्रविधि :–

प्रत्येक शोध कार्य की महता उपकरण पर निर्भर करती है क्योंकि उनकी उपयुक्कता, वैद्यता व विश्वसनीयता पर ही प्रदतो की विश्वसनीयता व वैद्यता निर्भर करती है। अनुसंधानकर्ता उपलब्ध उपकरणों का विश्लेषण करके उपयुक्त उपकरण का चयन करता है विभिन्न उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये भिन्न–भिन्न प्रकार के उपकरण प्रस्तत किये जाते है। अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए अनुसंधानकर्ता इन उपकरणों का प्रयोग कर सकता है।

उपकरणों के प्रकार :–

1. मानकीकृत उपकरण
2. अमानकीकृत उपकरण या स्वनिर्मित उपकरण

1. मानकीकृत उपकरण :– ''वे उपकरण जिन्हें किसी अनुसंधानकर्ता ने पूर्व में ही बड़े न्यादर्श पर मानक ज्ञात करके निर्मित कर लिया। तथा जिनकी वैद्यता व विश्वसनीयता निश्चित होती है।''

2. स्वनिर्मित उपकरण :– वे उपकरण जिन्हें किसी विशिष्ट उद्देश्य को लेकर बनाया जाता है। अनुसंधानकर्ता अपनी समस्या के अनुसार विधिवत् रूप से उसका निर्माण करता है।

3.9.2 प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त उपकरण :–

स्वनिर्मित उपकरण :– ''प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्त्री ने (स्वनिर्मित) इंटर्नशिप में शिक्षण विधियों कौशलों से सम्बन्धित अवलोकन सूची में प्रयोग किया गया है।

3.9.3 अवलोकन का अर्थ :–

''अवलोकन शब्द अंग्रेजी शब्द Observation का पर्याय है जिसका अर्थ होता है देखना, अवलोकन करना, प्रेषण करना या निरीक्षण करना किन्तु सामाजिक अनुसंधान की एक व्यवस्थित पद्धति के रूप में अवलोकन का अपना एक पृथक अर्थ है।

अवलोकन प्रणाली मे माध्यम से संकलित तथ्यपूर्ण सामग्री सदैव सामाजिक अनुसंधान को स्वस्थ और सबल बनाती है। अतः इस पद्धति को तथ्यपूर्ण सामग्री के लिये व्यवस्थित पद्धति मान सकते है। जिसके माध्यम से वास्तविकता का प्रत्यक्ष दर्शन किया जाता है।

3.9.4 परिभाषाएँ :–

मोसर के अनुसार :– '' अवलोकन को स्पष्ट रूप से वैज्ञानिक अन्वेषण की एक विशुद्ध प्रणाली कह सकते है।''

पी. वी. यंग के अनुसार :– '' अवलोकन को आंखों द्वारा सामूहिक व्यवहार एवं जटिल सामाजिक संस्थाओं के साथ ही साथ सम्पूर्ण रचना की करने वाली पृथक इकाईयों के अध्ययन विचारपूर्ण पद्धति के रूप में प्रयुक्त कर सकते है''

सी. ए. मेजर के अनुसार :– ''सही अर्थो में कानों तथा वाणी की अपेक्षा आंखों का प्रयोग ही अवलोकन होता है।''[7]

---

7 जैम, एम के (2014) ''शोध विधियाँ '' युनिर्वसिटी पब्लिकेशन पेज न. 258–264

अवलोकन की विशेषताएं :–

1. अवलोकन में मानव–इन्द्रियों का प्रयोग होता है।

2. वैज्ञानिक निरीक्षणकर्ता क्रमबद्ध निष्पक्ष और वैज्ञानिक ढ़ग से स्वाभाविक घटनाओं का निरीक्षण करता है।

3. अवलोकन सूची के माध्यम से कारण व परिणाम के सम्बन्ध का पता लगाया जा सकता है।

4. इसमें अवलोकनकर्ता सुक्ष्मता से अध्ययन करता है।

5. अवलोकन प्रणाली वैज्ञानिक विकास का मूल आधार है।

3.9.6. अवलोकन सूची के गुण :–

1. अवलोकन सूची सूचनाओंदाताओं को अध्ययन करने का प्रत्यक्ष साधन है।

2. अवलोकन सूची के माध्यम से स्वाभाविक व्यवहार वास्तविक का अध्ययन किया जाता है।

3. सूचना दाताओं से सूचना एकत्र करने का साधनं

4. प्रत्युतर में त्रुटियों की कम संभावना।

5. घटनाओं का गहन अध्ययन संभव।

3.9.7 अवलोकन सूची के दोष :–

1. सभी घटनाये प्रेषण के लिये स्वतंत्र नहीं होती।

2. घटनाओं का निश्चित समय व स्थान नही होता है।

3. कुछ घटनाओं का अवलोकन असम्भव है।

4. पिछली बातों का अवलोकन सम्भव नहीं है।

5. अवलोकन में अधिक समय तथा धन व्यय होता है।

3.9.10 प्रविधियाँ –

प्रविधि से तात्पर्य खास तरीके से सूचनाए प्राप्त करने से है। शोधकर्ता में विशेष योग्यता होने पर ही पूर्ण एवं सार्थक सूचनाएँ एकत्रित है अथवा नहीं। शोधकर्त्री ने अपने अध्यापन में सांख्यिकी प्रविधियों को चुना है।

3.9.11 उपकरण एवं प्रशासन –

शोधकर्त्री द्वारा स्वनिर्मित ''शिक्षण विधियों तथा कौशलों से संबंधित (अवलोकन सूची) का प्रयोग किया गया।

3.9.12 परीक्षण विवरण –

प्रस्तुत शोधकार्य में उपकरण स्वनिर्मित है इस उपकरण के माध्यम से इंटर्नशिप में शिक्षण विधियों संबंधित कौशलों का अध्ययन किया गया है इस परीक्षण में शिक्षण विधियों से संबंधित अवलोकन सूची में 3 विधियाँ ली गयी है जिनमें कुल प्रश्नों की संख्या 30 है तथा संबंधित कौशलों में 4 कौशल लिये गये है जिनकी कुल संख्या 18 है इन आयामों को इस प्रकार बनाया गया है।

इंटर्नशिप में शिक्षण विधियों से संबंधित अवलोकन सूची

कुल अंक – 150

आयाम	प्रश्नों का क्रमांक	कुल प्रश्न
व्याख्यान विधि	1,2,3,4,5,6,7,8,9,10	10
प्रदर्शन विधि	1,2,3,4,5,6,7,8,9,10	10
प्रश्नोत्तर विधि	1,2,3,4,5,6,7,8,9,10	10
कुल		30 प्रश्न

प्रत्येक प्रश्न के लिए 5 अंक निर्धारित है।

इंटर्नशिप में शिक्षण कौशलों से संबंधित अवलोकन सूची

आयाम	प्रश्नों का क्रमांक	कुल प्रश्न
प्रस्तावना कौशल	1,2,3,4	4
प्रश्न कौशल	5,6,7,8,9,10	5
श्यामपट्ट कौशल	10,11,12,13,14	5
व्याख्या कौशल	15,16,17,18	4
		कुल प्रश्न – 18

3.10 अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी :–

परीक्षण की सहायता से संग्रहीत किये गये आकड़ों से प्राप्त सूचनाएं जटिल, असम्बद्ध तथा बिखरे रूप में होती है। उचित विवेचन के लिए सामग्री को संगठित करना आवश्यक होता है इसके लिए सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया जाता हैं।

सांख्यिकी प्रविधि शोध को आधार प्रदान करती है किसी भी परीक्षण के निष्कर्ष के लिए सांख्यिकी की आवश्यकता होती है ये अनुसंधानकर्ता की परिकल्पनाओं का परीक्षण करती है। जिसके लिए परिकल्पनाएं कहां तक सत्य है। ये शोध के लिए एक सुनिश्चित योजना तैयार की करती है और प्राप्त तथ्यों का सारांश निकालकर उसे वास्तविक विचार व्यक्त करने के योग्य बना देती है। आज के युग मे हम मनुष्यों को विभिन्न क्षमताओं के विकास को भली प्रकार से मापन करने मे सक्षम हो जाते है इसी के आधार पर मापन में सांख्यिकी का अपना महत्व हैं।

3.10.1 सांख्यिकी की परिभाषाएँ :–

1. प्रो.बाउले के अनुसार :– ''सांख्यिकी एक ऐसा शास्त्र है जो सामाजिक जीवन रचना की क्रियाओं का उसकी समस्त प्रवृतियों में अध्ययन करता हैं।

2. विलियम किंग के अनुसार :– ''सांख्यिकी संग्रहित तथ्यों के विश्लेषण अथवा अनुमान के संकलन द्वारा प्रदत्त सामूहिक या सामाजिक घटनाओं के अध्ययन करने का ढंग हैं।

3. फर्ग्युसन के अनुसार :–''सांख्यिकी का सम्बंध सर्वेक्षणों और परीक्षणों द्वारा प्राप्त होने वाली सामग्री के संकलन, वर्गीकरण और व्याख्या से हैं।

सांख्यिकी का अर्थ :– सांख्यिकी शब्द को अग्रेंजी भाषा में Statistic कहा जाता है स्टेटिक्स लेटिन भाषा का स्टेटस या इटली भाषा के शब्द स्टेटिस्टा से बना है इसका प्रयोग आरम्भ में जन्म मरण की संख्याओं के विवरण का लेखा रखने के लिए किया जाता था। वर्तमान समय मे इसका हर क्षेत्र में प्रयोग किया जाता था। वर्तमान समय में इसका हर क्षेत्र में प्रयोग होने लग गया हैं।

3.10.2 सांख्यिकी की आवश्यकता :–

1. सांख्यिकी का ज्ञान प्रत्येक शोधकर्ता को होना आवश्यक हैं।
2. मार्गदर्शन की प्रक्रिया का आधार सांख्यिकी होती हैं।
3. प्रयोगों तथा शोधकार्य सांख्यिकी का प्रयोग के अभाव में विश्वसनीय एवं प्रमाणित नहीं होता है अनुसंधान तथा प्रयोग की व्याख्या के लिए सांख्यिकी का ज्ञान होना आवश्यक हैं।

3.10.3 सांख्यिकी का महत्व :–

1. सांख्यिकी में किसी परीक्षण के पद विश्लेषण करने में सहायता मिलती है इसके प्रत्येक पद का विभेनदनकारी मान और सरलतम मान तथा कठिनतम मान निकाला जाता हैं।

2. सांख्यिकी के द्वारा परीक्षण की वैद्यता एवं विश्वसनीयता का पता चलता हैं।

3. शिक्षा समस्याओं की व्यवस्था निपुणता की तुलना इन सांख्यिकी मापों के द्वारा की जाती हैं।

4. सांख्यिकी के एक का सम्बंध अन्य विषयों के साथ मिलकर यह जान सकते है कि विषयों मे आपस में कितनी समानताएं हैं।

3.10.4 प्रस्तुत शाोध मे अपनाई गयी सांख्यिकी विधियाँ –

1. मध्यमान

$$(M) = \frac{\Sigma x}{N}$$

M = मध्यमान

Σx = समकों का योग

N = समकों की संख्या

2. प्रमाणिक विचलन –

किसी समूह के प्राप्ताकों के मध्यमान के लिए गए प्रामाणिक विचलन के औसत वर्गमूल को उस समूह का मानक विचलन कहते हैं।

$$\text{प्रमाणिक विचलन SD} = \sqrt{\frac{\Sigma d^2}{N}}$$

SD = प्रमाणिक विचलन

D = मध्यमान से विचलन

Σd^2 = मध्यमान के लिये गये विचलन के वर्गो का योग

N = विद्यार्थियों की संख्या

3. टी मान परीक्षण (T Test)

$$T = \frac{M_1 - M_2}{\sqrt{\frac{(\sigma_1)^2}{N_1} + \frac{(\sigma_2)^2}{N_2}}}$$

M_1	=	प्रथम समूह का मध्यामान
M_2	=	द्वितीय समूह का मध्यामान
σ_1	=	प्रथम समूह का प्रमाणिक विचलन
σ_2	=	द्वितीय समूह का प्रमाणिक विचलन
N_1	=	प्रथम समूह की न्यादर्श संख्या
N_2	=	द्वितीय समूह की न्यादर्श संख्या

अध्याय– 4

तथ्यों का विश्लेषण वर्गीकरण एवं व्याख्या

4.1 भूमिका :–

प्रस्तुत अध्याय में संग्रहित प्रदत्तों का प्रस्तुतीकरण तथा विश्लेषण के उद्देश्यों एवं परिकल्पनाओं के सन्दर्भ में किया गया हैं। प्रस्तुत लघुशोध प्रंबध अध्ययन का उद्देश्य इंटर्नशिप में शिक्षण विधियों, सम्बन्धित कौशलों एवं उनकी अनुप्रयोगात्मक दक्षता का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना हैं।

प्रस्तावना

अनुसंधान में संकलित तथ्यों को वैज्ञानिक ढंग से एक सारणी के अन्तर्गत प्रदर्शित करना ही सारणीयन है। सारणीयन में अंको से प्राप्त होने वाली सूचनाएं स्पष्ट होती है। समस्या की व्याख्या उचित व स्पष्ट होती है तथा आंकड़ो से यथोचित निष्कर्ष निकाले जा सकते है। यहां तक कि इसके द्वारा गुणात्मक रुप में प्रस्तुत करने की एक प्रणाली है। यह संकलित तथ्यों को बोधगम्य व व्यवस्थित बनाती है।

4.2 सारणीयन :–

समकों के वर्गीकरण के पश्चात् उन्हें सही रूप में समझने के लिए समकों की सारणी बनायी जाती है। इससे अध्ययन में सुगमता बाती है।

सारणीयन का अर्थ व परिभाषा :–

वर्गीकरण के पश्चात् सांख्यिकी साम्रगी को सारणियों के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। इस प्रकार वर्गीकरण सारणीयनन का आधार है। जैसा वर्गीकरण होता है। उसी के अनुरूप सारणीयन भी करना पड़ता है। यदि वर्गीकरण बहुमुखी तथा जटिल है तो सारणी वैसी होगी। सारणीयन द्वारा एकत्रित सामग्री को सरल, संक्ष्ज्ञिपत तथा सुबोध बनाया जाता हैं

1. एल्हंस के अनुसार :–

''विस्तृत अर्थ में सारणीयन तथ्यों की स्तम्भों तथा पंक्तियों में क्रमबद्ध रूप में व्यवस्थित करता है।''

2. सपट के अुनसार :–

''एक सांख्यिकीक सारणी में संबंधित तथ्यों का उदग्र रवानों तथा समतल पंक्तियों में किया गया वर्गीकरण है।''

3. कौनर के अनुसार :–

''सारणीयन किसी विचारधीन समस्या को स्पष्ट करने के उद्देश्य से किया जाने वाला सांख्यिकीय का क्रमबद्ध एवं सुव्यवस्थित प्रस्तुतीकरण है।''

सारणीयन के उद्देश्य :–

1. तथ्यों को संक्षिप्त रूप प्रदान करना।
2. तथ्यों को तुलनीय बनाना।
3. तथ्यों को स्पष्ट तथा बोधगम्य बनाना।
4. सांख्यिकी विवेचना में सहायकं
5. विशेषताओं का प्रदर्शन करना।

सारणीयन के गुण :–

1. आकर्षकता :–

एक सारणी को आकर्षक होने के लिए उसके खानों का समानुपातिक होना, सांख्यिकी के लिखने का ढ़ग, स्वतंत्रता तथा लेख की सुन्दरता आदि आवश्यक तत्व है।

2. समुचित प्रकार :–

एक स्तरीय सारणी आकार समुचित होना चाहिए। आकार न बड़ा ने अधिक छोटा होना चाहिए।

3. स्पष्टता तथ सरलता :–

एक उतम सारणी का स्पष्ट तथा सरल होना परम आवश्यक है। जिससें समको को तुरन्त खोज सके।

तालिका संख्या 4.1

परिकल्पना 1

इंटर्नशिप में छात्राध्यापक व छात्राध्यापिकाओं में शिक्षण कौशलों से सम्बन्धित दक्षता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता हैं।

क्र.सं.		संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी मान	सार्थकता स्तर व मान
1	छात्राध्यापक	15	65.93	6.80	1.76	सार्थक अन्तर नहीं है 0.05=2.05 0.01=2.76
2	छात्राध्यापिकाएँ	15	69.66	4.61		

df = $(N_1+N_2 - 2)$

$= (15+15 - 2) = 28$

आरेख संख्या 4.1

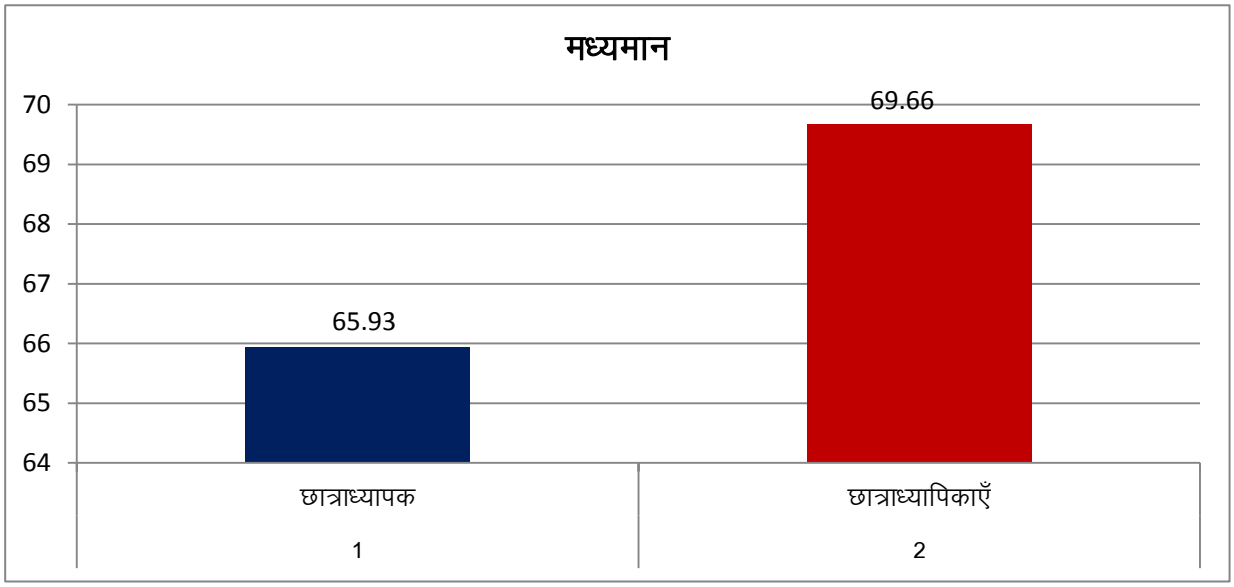

इंटर्नशिप में छात्राध्यापक व छात्राध्यापिकाओं में कौशलों से संबंधित मध्यमान का आरेखीय निरूपण

तालिका संख्या 4.1 से स्पष्ट होता है कि इटंर्नशिप में कौशलों से सम्बन्धित दक्षता में छात्राध्यापकों का मध्यमान 65.93 व प्रमाणिक विचलन 6.80 हैं।

तथा इंटर्नशिप मे कौशलों से सम्बन्धित दक्षता में छात्राध्यापिकाओं का मध्यमान 69.66 व प्रमाणिक विचलन 4.61 है और 't'का प्राप्त मान 1.76 है जो 't'के तालिका मान से कम हैं। जो स्तर 0.05 स्तर पर मान 2.05 तथा 0.01 तथा 0.01 स्तर पर मान 2.76 अर्थात् (1.76<2.05) और (1.76<2.76) अपेक्षित मान कम होने से परिकल्पना स्वीकृत होती हैं।

निष्कर्षः परिकल्पना संख्या 1 ''इटर्नशिप में छात्राध्यापक व छात्राध्यापिकाओं में कौशलों से सम्बन्धित दक्षता मे सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है परिकल्पना स्वीकृत होती है क्योंकि छात्राध्यापक और छात्राध्यापिकाएँ ने शिक्षण कौशल प्रस्तावना कौशल, प्रश्न कौशल, श्यामपट्ट कौशल, व्याख्या कौशल का प्रयोग लगभग एक जैसे तरीके से किया हैं।

अवलोकन सम्बन्धी कार्य करते समय शोधकर्त्री ने यह पाया कि प्रशिक्षणार्थियों द्वारा प्रस्तावना कौशल के प्रयोग में प्रकरण से सम्बन्धित प्रश्न पाये गये, प्रश्नों में तारतम्यता पायी गयी प्रश्न कौशल में प्रश्न छोटे व स्पष्ट थे विद्यार्थियों क स्तरानुसार थे। श्यामपट्ट कौशल का प्रयोग उचित ढंग से किया गया। व्याख्या संक्षिप्त थी व स्वष्टतापूर्वक विद्यार्थियों का समझाया गया।

परिकल्पना 2.

इटर्नशिप के दौरान प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षण विधियों तथा सम्बन्धित कौशलों के अनुप्रयोग मे अन्तर नहीं पाया जाता है।

तालिका संख्या 4.2

क्र.सं.		संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी मान	सार्थकता स्तर व मान
1	छात्राध्यापक	15	172.86	14.25	0.45	सार्थक अन्तर नहीं है 0.05=2.05 0.01=2.76
2	छात्राध्यापिकाएँ	15	180.2	12.35		

df = $(N_1+N_2 - 2)$

= (15+15 – 2) =28

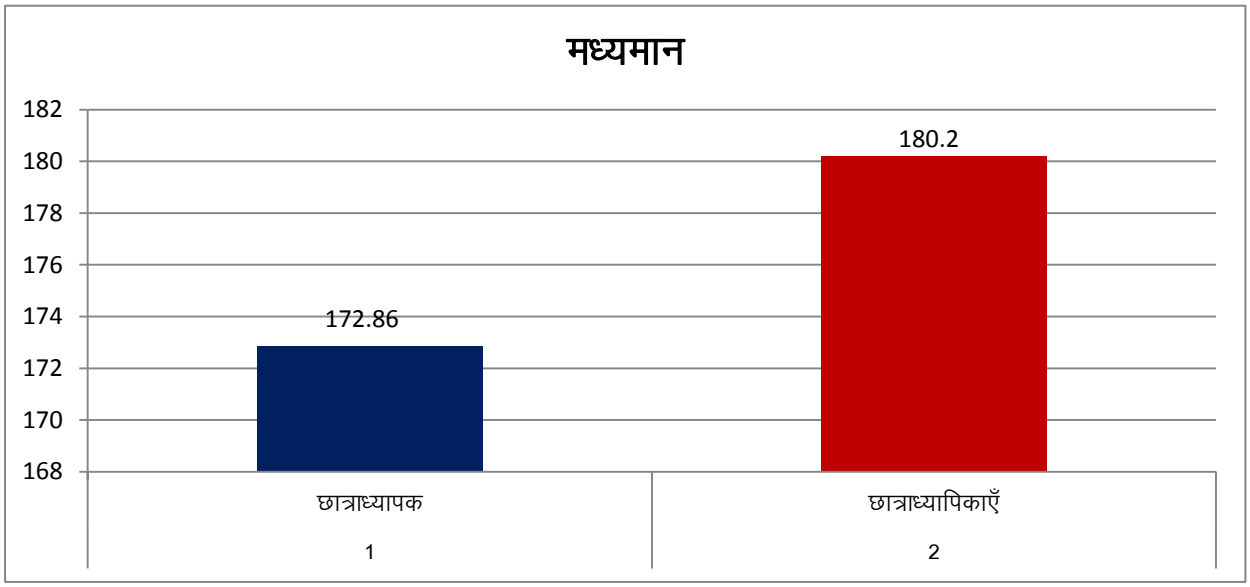

इटर्नशिप के दौरान प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षण विधियों तथा सम्बन्धित कौशलों के अनुप्रयोग सम्बन्धित मध्यमान का आरेखीय निरूपण।

तालिका संख्या 4.2 से स्पष्ट होता है कि इटंर्नशिप में शिक्षण विधियों व सम्बन्धित कौशलों के अनुप्रयोग में छात्राध्यापकों का मध्यमान 172.86 व प्रमाणिक विचलन 14.25 है तथा इंटर्नशिप में शिक्षण विधियों व सम्बन्धित कौशलों के अनुप्रयोग में छात्राध्यापिकाओं का मध्यमान 180.2 व प्रमाणिक विचलन 12.53 हैं और 't'का प्राप्त मान 0.45 है तालिका मान के दोनों सार्थक अन्तर से कम हैं अर्थात् 0.05=2.05 और 0.01=2.76 अपेक्षित मान कम होने से परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष परिकल्पना संख्या 2 ''इटंर्नशिप के दौरान प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षण विधियों तथा सम्बन्धित कौशलों के अनुप्रयोग मे सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता परिकल्पना स्वीकृत होतीहै क्योंकि छात्राध्यापक और छात्राध्यापिकाओं ने शिक्षण विधियां व्याखान विधि, प्रदर्शन विधि, प्रश्नोत्तर विधि और शिक्षण कौशल, प्रस्तावना कौशल, प्रश्न कौशल, श्यामपट्ट, व्याख्या कौशल का प्रयोग लगभग समान तरीके से किया हैं। प्रशिक्षणार्थियों द्वारा विधियों का प्रयोग करते समय प्रत्येक विधि जिसमें व्याखान, प्रश्नोत्तर व प्रदर्शन विधि के सभी घटकों का समावेश करते हुए शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाने का प्रयास किया शिक्षण कौशलों प्रस्तावना, प्रश्न, श्यामपट्ट, व्याखान कौशल के माध्यम से प्रकरण को सरलतापूर्वक विद्यार्थियों का समझाया।

परिकल्पना 3.

इटर्नशिप के दौरान प्रशिक्षणार्थियों द्वारा कक्षा–कक्ष में किये जाने वाले विभिन्न कार्यकलापों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता हैं।

क्र.सं.		संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी मान	सार्थकता स्तर व मान
1	छात्राध्यापक	15	100.66	9.87	0.94	सार्थक अन्तर नहीं है 0.05=2.05 0.01=2.76
2	छात्राध्यापिकाएँ	15	103.46	5.97		

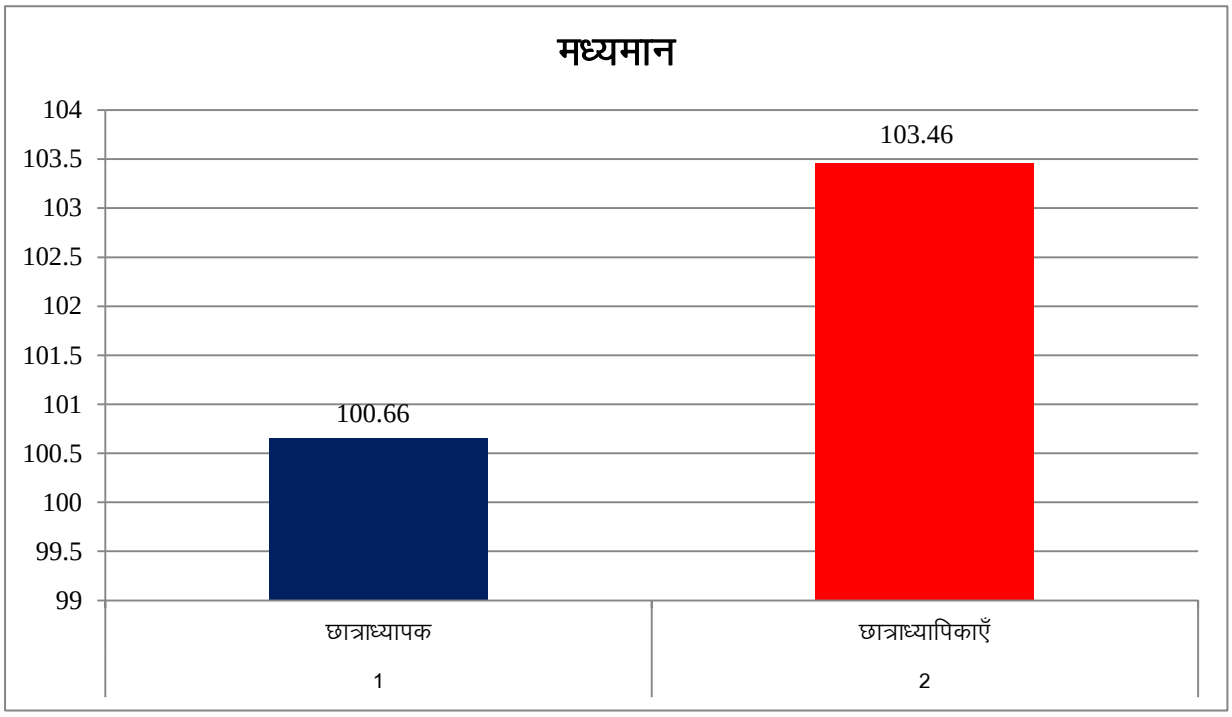

इटर्नशिप के दौरान प्रशिक्षणार्थियों द्वारा कक्षा–कक्ष में किये जाने वाले कार्यकलापों से सम्बन्धित मध्यमान का आरेखीय निरूपण

तालिका संख्या 4.3 से स्पष्ट होता है कि इटंर्नशिप के दौरान कक्षा–कक्ष में किये जाने वाले कार्यकलापों से सम्बन्धित छात्राध्यापकों का मध्यमान 100.66 व प्रमाणिक विचलन 9.87 है तथा इंटर्नशिप में शिक्षण के दौरान कक्षा–कक्ष में किये जाने वाले कार्यकलापों से सम्बन्धित छात्राध्यापिकाओं का मध्यमान 103.46 व प्रमाणिक विचलन 5.97 हैं और 't'का प्राप्त मान 0.94 है तालिका मान के 0.05=2.05 और 0.01=2.76 अपेक्षित मान कम होने से परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष परिकल्पना संख्या 3 इटंर्नशिप के दौरान प्रशिक्षणार्थियों द्वारा कक्षा–कक्ष में किये जाने वाले विभिन्न कार्यकलापों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया अतः परिकल्पना स्वीकृत होती है क्योंकि छात्राध्यापक और छात्राध्यापिकाओं ने कक्षा–कक्ष में चार्ट, चित्र मॉडल का प्रयोग लगभग समान तरीके से किया प्रशिक्षणार्थियों द्वारा कक्षा–कक्ष मे शिक्षण कार्य करवाते समय प्रश्नों को व्यावहारिक जीवन से जोड़ने का प्रयास किया तथा श्रव्य दृश्य सहायक सामग्री का उचित प्रयोग करने से विद्यार्थियों क्रियाशील बनाने का प्रयास किया गया। जिससे कक्षा शिक्षण प्रभावी हो पाया।

पंचम अध्याय

शोध का सारांश एवं निष्कर्ष

5.1 प्रस्तावना :–

शिक्षा का सौद्देश्य प्रक्रिया है। शिक्षा के उद्देश्य वर्तमान परिस्थिति व आवश्यकतानुसार बदलते रहते है शिक्षा का उद्देश्य निर्धारित पाठ्यक्रम को समाप्त कर देना ही नहीं होता वरन् शिक्षा का कार्य छात्रों के व्यवहार में वांछित परिवर्तन करना होता है प्रत्येक शिक्षक का अपने शिक्षण कार्य को प्रभावी बनाने के लिये अनेक शिक्षक विधियों व कौशलों का ज्ञान होना आवश्यक है जिसके माध्यम से शिक्षक अपने शिक्षण कार्य को सफलतापूर्वक पूरा कर सकें। शिक्षण विधियो व कौशलों के प्रयोग से शिक्षा में नवीनता आती है जिससे शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायता मिलती है। शिक्षण विधियां व कौशल ही वह साधन है जिसके माध्यम से शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाया जा सकता हैं।

5.2 समस्या कथन –

''इंटर्नशिप में शिक्षण विधियों, सम्बन्धित कौशलों एवं उनकी अनुप्रयोगात्मक दक्षता का विश्लेषणात्मक अध्ययन''

5.3 शोध के उद्देश्य :–

1. इंटर्नशिप में शिक्षण विधियों, सम्बन्धित कौशलों एवं उनकी अनुप्रयोगात्मक दक्षता का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।
2. इंटर्नशिप के दौरान प्रशिक्षणर्थियों द्वारा शिक्षण विधियों एवं सम्बन्धित कौशलों के अवलोकन सम्बन्धी प्रश्नावली सूची तैयार करना।
3. इंटर्नशिप के दौरान प्रशिक्षणर्थियों में शिक्षण विधियों एवं सम्बन्धित कौशलों के अनुप्रयोग का अध्ययन करना।
4. इंटर्नशिप में छात्राध्यापक तथा छात्राध्यापिकाओं में कौशलों से सम्बन्धित दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

5. इंटर्नशिप के दौरान प्रशिक्षणर्थियों द्वारा कक्षा–कक्ष में किये जाने वाले कार्यकलापों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

5.4 शोध की परिकल्पनाएँ :–

1. इंटर्नशिप में छात्राध्यापक व छात्राध्यापिकाओं में कौशलों से सम्बन्धित दक्षता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।
2. इंटर्नशिन के दौरान प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षण विधियों तथा सम्बन्धित कौशलों के अनुप्रयोग में सार्थक अंतर नही पाया जाता है।
3. इंटर्नशिप के दौरान प्रशिक्षणार्थियों द्वारा कक्षा–कक्ष में किये जाने वाले विभिन्न कार्यकलापों में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

5.5 शोध विधि :–

प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया हैं।

5.6 न्यादर्श :–

प्रस्तुत शोध प्रबंधन में शोधकर्त्री द्वारा 30 प्रशिक्षणार्थियों का चयन किया गया है जिसमें 15 छात्राध्यापक व 15 छात्राध्यापिकाएँ हैं।

5.7 उपकरण :–

प्रस्तुत शोध प्रबंध में शोधकर्त्री द्वारा शिक्षण विधियों व सम्बन्धित कौशलों से सम्बन्धित अवलोकन सूची (स्वनिर्मित) का प्रयोग किया गया हैं।

5.8 शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी शोध में निम्नलिखित सांख्यिकी का प्रयोग किया गया हैं।

1. मध्यमान $\overline{X} = \frac{\Sigma x}{N}$

2. प्रामाणिक विचलन (S.D) का मान

$$SD = \sqrt{\frac{\Sigma d^2}{N}}$$

3. टी मान परीक्षण (T Test)

$$T = \frac{M_1 - M_2}{\sqrt{\frac{(\sigma_1)^2}{N^1} + \frac{(\sigma_2)^2}{N^2}}}$$

5.9 शोध के परिणाम एवं निष्कर्ष :–

प्रस्तुत लघुशोध प्रबंधन इंटर्नशिप में शिक्षण विधियों सम्बन्धित कौशलों एवं उनकी अनुप्रयोगात्मक दक्षता का विश्लेषणात्मक अध्ययन से सम्बन्धित है। अध्याय चार के अन्तर्गत संग्रहित तथ्यों का सांख्यिकी विधियों किया और उसके आधार पर विभिन्न प्रकार के तथ्य सामने आये और परिकल्पनाओं की जांच की गई। प्राप्त सभी परिणाम इंटर्नशिप में प्रयोग में आने वाली शिक्षण विधियों व कौशलों से सम्बन्धित है। इन सबके आधार पर निम्न निष्कर्ष सामने आये हैं।

सारणी संख्या 4.1 में उल्लेखित परिणामों के आधार पर शून्य परिकल्पना संख्या 1 इंटर्नशिप में छात्राध्यापक व छात्राध्यापिकाओं में शिक्षण कौशलों से सम्बन्धित दक्षता मे सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता हैं। परिकल्पना स्वीकृत होती है दोनों समूहों के मध्यमानों को देखने के उपरान्त यह निष्कर्ष निकलता है इंटर्नशिप मे कौशलों की दक्षता में छात्राध्यापिकाओं का मध्यामान 69.66 है अतः छात्राध्यापिकाएं शिक्षण कौशलों में अधिक दक्ष पायी गयी।

सारणी संख्या 4.2 में उल्लेखित परिणामों के आधार पर शून्य परिकल्पना संख्या 2 '' इंटर्नशिप के दौरान प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षण विधियों तथा सम्बन्धित कौशलों के अनुप्रयोग में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है। परिकल्पना स्वीकृत होती है। दोनों समूहों के मध्यमानों को देखने के उपरान्त यह निष्कर्ष निकलता है इंटर्नशिप के दौरान प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षण विधियों तथा सम्बन्धित कौशलों के अनुप्रयोग में छात्राध्यापिकाओं का मध्यमान 180.2 हैं। छात्राध्यापकों से अधिक है अतः छात्राध्यापिकाएं शिक्षण विधियों व कौशलों के अनुप्रयोग मे अधिक दक्ष पायी गयी।

सारणी संख्या 4.3 में उल्लेखित परिणामों के आधार पर शून्य परिकल्पना संख्या 3 '' इंटर्नशिप में प्रशिक्षणार्थियों द्वारा कक्षा–कक्ष में किये जाने वाले कार्यकलापों में सार्थक

अन्तर नहीं पाया जाता है परिकल्पना स्वीकृत होती है। दोनों समूहों के मध्यमानों को देखने के उपरान्त यह निष्कर्ष निकलता है कि इंटर्नशिप के दौरान प्रशिक्षणार्थियों द्वारा कक्षा–कक्ष में किये जाने वाले कार्यकलापों में छात्राध्यापिकाओं का मध्यमान 103.46 है जो छात्राध्यापकों के मध्यमान से अधिक है अतः छात्राध्यापिकाएं कक्षा–कक्ष में किये जाने वाले कार्यकलापों में अधिक दक्ष पायी गयी।

5.10 भावी शोध हेतु सुझाव :–

1. प्रस्तुत अध्ययन मे न्यादर्श क रूप में बी.एड. प्रशिक्षणर्थियों को लिया गया है अतः एक अध्ययन एस.टी.सी प्रशिक्षणार्थियों पर भी किया जा सकता।

2. प्रस्तुत लघुशोध प्रबंध में बी.एड प्रशिक्षणर्थियों के इंटर्नशिप में तीन शिक्षण विधियों व चार कौशलों का ही अवलोकन किया गया अतः और भी शिक्षण विधियों व सम्बन्धित कौशलों का अध्ययन किया जा सकता हैं।

3. प्रस्तुत शोध प्रबंध में शोधकर्त्री ने शोध कार्य को बीकानेर जिले की श्री डुंगरगढ तहसील तक ही सीमित किया गया हैं। भविष्य में इस अनुसंधान को राजस्थान के अन्य जिलों पर भी किया जा सकता हैं।

4. आदिवासी क्षेत्रों, पहाड़ी व रेतीले क्षेत्रों के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों को प्रतिदर्श लेकर किया जा सकता है।

5. इस शोध अध्ययन में शोधकर्त्री बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों का अवलोकन किया गया भविष्य में इसे इससे अधिक विद्यालयों में भी इंटर्नशिप के दौरान बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों का अवलोकन किया जा सकता हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अग्रवाल, जे.सी (2006)''शैक्षिक तकनीकी एवं प्रबन्ध'' विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।

2. भाटिया, के.के (2006) ''शैक्षिक तकनीकी एक परिचय'' कल्याणी पब्लिशर्स लुधियाना पंजाब।

3. भट्टाचार्य, जे.सी (2007)''अध्यापक शिक्षा'' अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा।

4. बुच, एम.बी (1978–63)''वैल्यू इन इण्डियन सोसायटी'' शिक्षा में शोध का तृतीय सर्वे, नई दिल्ली।

5. बुच, एम.बी (1982–1987)''वैल्यू इन इण्डियन सोसायटी'' शिक्षा में शोध का तृतीय सर्वे, नई दिल्ली।

6. गैरिट, हेनरी.ई (1991)''शिक्षा एवं मनोविज्ञान मे सांख्यिकी कल्याण पब्लिशर्स।''

7. गोदिका, साधना (2007)''शिक्षण कला'' आस्था प्रकाशन जयपुर।

8. गुड, कार्टर.बी. (1959)''इस्ट्रोडक्शन टू एजुकेशन रिसर्च न्यूयार्क'' एटलेटन सैचरी कांफ्रेंस।

9. जैन, अमीर चन्द्र (2007)''सामाजिक ज्ञान शिक्षण'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।

10. जौहरी, बी.पी (2007) ''भारतीय शिक्षा का इतिहास'' विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।

11. कपिल एच.के. (2007) ''अनुसंधान विधियां'' विनोद पुस्तक भवन आगरा।

12. कपूर, बीना.मृदुला (2007)''शिक्षा में मापन मूल्याकंन एवं सांख्यिकी'' विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।

13. माथुर, सावित्री (2007) ''सुक्ष्म शिक्षण एवं शिक्षण कौशल'' आस्था प्रकाशन जयपुर।

14. सक्सेना, निर्मल. (2008) ''शैक्षिक प्रौद्योगिकी एवं कक्षा–कक्ष प्रबंध'' मलिक एण्ड कम्पनी जयपुर।

15. सक्सेना, राधारानी. (2007) ''कौशल आधारित शिक्षण की रूपरेखा'' आस्था प्रकाशन जयपुर।

16. सरीन एण्ड सरीन (2008) ''शैक्षिक अनुसंधान विधियां'' विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।

17. सिडाना, अशोक. पी.एन. (2007) ''सामाजिक अध्ययन शिक्षण'' शिक्षा प्रकाशन जयपुर।

18. शर्मा, आर.ए. (2009) ''शैक्षिक अनुसंधान'' आर लाल बुक डिपो मेरठ।

पत्र–पत्रिकाएँ –

1. कर्मयोगी, आर.पी. (2016) ''व्याखान के अतिरिक्त अन्य शिक्षण प्रविधियां'' वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका. माध्यमिक शिक्षा राजस्थान वर्ष 56 अंक 7 पेज न. 36–37

2. शर्मा, प्रहलाद (2015) ''विज्ञान शिक्षण की नई विद्याए'' वरिष्ठ सम्पादक शिविरा पत्रिका. माध्यमिक शिक्षा राजस्थान. वर्ष 56 अंक 6 पेज न.7–8

Website –

1. w.w.w.google.com

2. w.w.w.wikipedia.com

3. shodhganna.inflibnet.ac.in